जिनोदय सूरि विरचित
हंसराज वछराजनो रास.

शीलादि माहात्म्यरूप.

आ ग्रंथ चतुर्विध संघने उपयोगी जाणी
यथाशक्ति शुद्ध करावी छपावी प्रसिद्ध करनार

श्रावक भीमसिंह माणेक,

जैन पुस्तक वेचनार तथा प्रसिद्ध करनार.

मांडवी, शाकगल्ली, मुंबइ.

आवृत्ति पांचमी.

वीर संवत् २४४३ विक्रम संवत् १९७३ सने १९१७.

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the Nirnaya-Sagar Press, 23, Kolbhat Lane, Bombay.

Published by Bhanji Maya for Bhimsi Maneck, 225-231; Mandvi, Sackgalli, Bombay.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ॐ श्रीजिनेश्वराय नमः ॥ श्रीसद्गुरुभ्यो नमः ॥

॥ अथ श्री हंसराज वत्सराजनो रास प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ आशावरी राग ॥

॥ आदीश्वर आदे करी, चउवीशे जिणचंद ॥ सरसती मन समरुं सदा, श्रीजयतिलक सूरींद ॥ १ ॥ सद्गुरु पय प्रणमी करी, पामी गुरु आदेश ॥ पुण्य तणां फल बोलशुं, कहीशुं हुं लवलेश ॥ २ ॥ पुण्ये शिवसुख संपजे, पुण्ये संपत्ति होय ॥ राजऋद्धि लीला घणी, पुण्ये पामे सोय ॥ ३ ॥ पुण्ये उत्तम कुल हुवे, पुण्ये रूप प्रधान ॥ पुण्ये पूरुं आउखुं, पुण्ये बुद्धिनिधान ॥ ४ ॥ पुण्य उपर सुणजो कथा, सुणतां अचरिज थाय ॥ हंसराज वत्सराज नृप, हुवा पुण्य पसाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ राग धन्याश्री ॥ कोश्या कामिनी एणी परे विनवे जी ॥ ए देशी ॥

॥ जंबुद्वीपे भरत वखाणीए जी, पुरपयठाण प्रधान ॥ अलकापुर समोवरु ते जाणीए जी, वृद्ध तणुं नहीं मान ॥ जंबु० ॥ १ ॥ जाइ जुइ ने चंपो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मोगरो जी, सेवंत्री सुकुमाल ॥ केवडो करेणो ने वली मालती जी, पूगी ताल तमाल ॥ जंबु० ॥ २ ॥ आंबा रायण जंबु करमदां जी, वड पींपल ने डाख ॥ जंबीरी ने दाडिम नींबुआं जी, वृक्ष तणा तिहां लाख ॥ जंबु० ॥ ३ ॥ पुरपयठाण नगर पासे वहे जी, गंगा-जल सम नीर ॥ नदी गोदावरी नामे गुणभरी जी, जल जेवुं गोक्षीर ॥ जंबु० ॥ ४ ॥ हंस चकोर ने चकवा सारही जी, बगलां बेठां तीर ॥ चीभी चास तित्तर पारेवडां जी, केलि करे ते नीर ॥ जंबु० ॥ ५ ॥ गढ मढ मंदिर सोहे देहरां जी, वली पोशाल निशाल ॥ नगर चोराशी चहुटां चिहुं दिशे जी, उपर झाक-झमाल ॥ जंबु० ॥ ६ ॥ विविध व्यापारी नगर मांहे वसे जी, धर्मी ने धनवंत ॥ चार वरणनां लोक तिहां रहे जी, धर्म तणी मन खंत ॥ जंबु० ॥ ७ ॥ शालि-वाहन सुत नरवाहन पटे जी, रूपे अमर समान ॥ ख्याग त्याग निकलंक सदा भलो जी, सहुको माने आण ॥ जंबु० ॥ ८ ॥ यादव वंश विभूषण उपनो जी, जीवदया प्रतिपाल ॥ त्रणसें साठ अंतेउरी तेहने जी, उत्तम गुणहि विशाल ॥ जंबु० ॥ ए ॥ गयवर हय-वर आगे हींसता जी, नाटक बहु बत्रीश ॥ महेता

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

शेठ सेनापति मंत्रवी जी, सेवे कुलि बत्रीश ॥ जंबु०
॥ १० ॥ बावन वीर सदा सेवा करे जी, बंधव अति बल-
वंत ॥ लहुडो शक्तिकुंवर सोहामणो जी, सकल कला
गुणवंत ॥ जंबु० ॥ ११ ॥ एक दिन सुतो नरवाहन सुखे
जी, निद्रावश नरपूर ॥ पहेली ढाले राजा पोढीयो जी,
कहे श्रीजिनोदय सूरि ॥ जंबु० ॥ १२ ॥ सर्व गाथा ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुतो सुपनांतर लहे, अद्भुत सुपन नरेश ॥
दिवस उग्यो जागे नहीं, देखे नयर निवेश ॥ १ ॥
कणयापुर पाटण गयो, कीधो नगरी प्रवेश ॥ हंसावलि
रायपुत्रिका, दीठो अद्भुत वेश ॥ २ ॥ कनकब्रम राजा
सुता, परणावी सा बाल ॥ दीधा बहुला दायजा,
सुखे गमतो तिहां काल ॥ ३ ॥ दरबारे सहुको मिल्या,
खान अने सुलतान ॥ शेठ अने सेनापति, बेठा बहु
दीवान ॥ ४ ॥ नरपतिने नेटण नणी, पुर प्रगणे कै
नूप ॥ निमित्तिया आया तिहां, कहेवा सकल
सरूप ॥ ५ ॥ ब्राह्मण वेद नणे जीके, वली ज्योतिषिया
जाण ॥ वैदराज आवी मिल्या, नट चट करे वखाण
॥ ६ ॥ हयवर आगे हींसता, गयवर गरज करंत ॥
पायक आया प्रणमवा, इणी परि मेल मिलंत ॥ ७ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल बीजी ॥

॥ श्रेणिक मन अचरिज थयो ॥ ए देशी ॥

॥ कौतुकीया कौतुक जणी, लेइ सघलो साजो रे ॥ एकण विण सहुको मिल्या, एक नहीं महाराजो रे ॥ १ ॥ जेवुं घर दीपक विना, अंधकार किम जायो रे ॥ एकणही राजा विना, गोवाला विण गायो रे ॥ जे० ॥ २ ॥ तिणे अवसर तिहां आवीयो, मनकेसरी मनरंगो रे ॥ लोक लाख मिल्यां जिहां, प्रणमे सहु उछरंगो रे ॥ जे० ॥ ३ ॥ आदर दै आघो गयो, पहोतो राजा पासो रे ॥ आसंगो करी अति घणो, सामि सुणो अरदासो रे ॥ जे० ॥ ४ ॥ तुम दरबार सहु खडे, भेटण आया काजो रे ॥ दिनकर पण उंचो चढ्यो, उठो श्रीमहाराजो रे ॥ जे० ॥ ५ ॥ मंत्री वचन राय जागीयो, आलस मोडी अंगो रे ॥ सुतो सिंह जगावीयो, कीधो निद्राभंगो रे ॥ जे० ॥ ६ ॥ कोपानल राजा हुउं, रातां लोचन कीध रे ॥ रीस भरे राय उठीयो, खांडुं हाथे लीध रे ॥ जे० ॥ ७ ॥ रे मूरख कीधुं कीस्युं, हुं निद्रा मांहि आजो रे ॥ कणयापुर पाटण गयो, कनकक्रम तिहां राजो रे ॥ जे० ॥ ८ ॥ तस पुत्री हंसावलि, अपछरने अनुहारो रे ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रंग जंग करी अति घणा, परणी में सुविचारो रे ॥ जे० ॥ ए ॥ तेहनो तें विरहो कीयो, सुखमें कीयो अंतरायो रे ॥ जीवंतां नवि विसरे, इम बोले महारायो रे ॥ जे० ॥ १० ॥ खड्ग काढी जव धाइउं, मंत्रीश्वर मन चिंते रे ॥ सुहणां किम साचां हुवे, राय पड्यो किसी भ्रांते रे ॥ जे० ॥ ११ ॥ जूहारी साचो चवे, उगे पश्चिम नाणो रे ॥ समुद्र किमे पूरो हुवे, आपणो न होय राजानो रे ॥ जे० ॥ १२ ॥ मनकेसरी मुहतो नणे, विण अपराध कांइ मारो रे ॥ बीजी ढाल पूरी हुइ, आगल जेह प्रकारो रे ॥ जे० ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥ ३७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मंत्री कहे राजा सुणो, कीजे काम विमास ॥ पछे न पस्तावो हुवे, जीव हुवे न उदास ॥ १ ॥ सुपन मांहि परणी जीके, हंसावलि जसु नाम ॥ परतख ते परणावीशुं, सारशुं वंछित काम ॥ २ ॥ इण वचने सुसतो हुउं, खड्ग धस्युं निज ठाम ॥ सुसतो शीतल जाणीयो, मंत्री करे प्रणाम ॥ ३ ॥ अवधि दीयो एक मासनी, जोवरावुं सा नार ॥ राय कहे बिहुं मासनी, तां लगे करो विचार ॥ ४ ॥ मंत्रीश्वर तुं मुज

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

खरो, जो मेले मुज नार ॥ पृथ्वीपति पधरावीयो, सहुको करे जुहार ॥ ५ ॥ मंत्रीसर आयो घरे, शोचे बुद्धिनिधान ॥ किणविध ते नारी मिले, रीझें किम राजान ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ शील कहे जग हुं वरो ॥ ए देशी ॥ राग रामग्री ॥

॥ मंत्री तस कीधुं किस्युं, सत्रकार तिहां मांड्यो रे ॥ मरण तणे मेले करी, सहु प्रमाद तिणे ठांड्यो रे ॥ मं० ॥ १ ॥ चिहुं दिशि चिहुं पोले सदा, मागे ते तसु दीजे रे ॥ नाकारो नवि कीजीए, नाम ठाम पूछीजे रे ॥ मं० ॥ २ ॥ सोफी संन्यासी घणा, जोगी जंगम जाटो रे ॥ बंजण अवधूत कापडी, मिलीया नरना थाटो रे ॥ मं० ॥ ३ ॥ एम करतां बहु दिन गया, परदेशी पूछंतो रे ॥ गाम नाम नवि को कहे, पूछी पूछी विरतंतो रे ॥ मं० ॥ ४ ॥ एक आयो परदेशथी, मुहते नयणे दीठो रे ॥ आदर दीधो अति घणो, मुह कराव्यो मीठो रे ॥ मं० ॥ ५ ॥ कहो तुमे किहांथी आवीया, किण देशांतर वासी रे ॥ कवण नगर तुमे निरखीयां, तव ते कहे विमासी रे ॥ मं० ॥ ६ ॥ अडसठ तीरथ में कीयां, बहु धरती में दीठी रे ॥ कण-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

यापुरथी आवीयो, वात कही अति मीठी रे ॥ मं० ॥ ७ ॥ भूख्यां भोजन संपजे, जिम तरस्याने पाणी रे ॥ मुहताने मन जे हुती, तेहज बोल्यो वाणी रे ॥ मं० ॥ ८ ॥ आदर देइ अति घणो, पूछे तेहने वातो रे ॥ कणयापुर ते किहां अछे, वात कहो विख्यातो रे ॥ मं० ॥ ए ॥ समुद्र परे अति शोभतो, कणयापुर पैठाणो रे ॥ कनकध्वज राजा तिहां, बहु बुद्धि चतुर सुजाणो रे ॥ मं० ॥ १० ॥ हंसावलि रायपुत्रिका, रूपे रंभ समाणी रे ॥ तिहांथी हुं आव्यो इहां, मंत्री वात सहु जाणी रे ॥ मं० ॥ ११ ॥ ते परदेशी लेइने, नरवर पासे आवे रे ॥ आगल मूकी भेटणुं, रंगे राय वधावे रे ॥ मं० ॥ १२ ॥ पूर्व वात मांमी कही, जिम परदेशी भाखी रे ॥ राये वात मानी खरी, ते नर कीधो साखी रे ॥ मं० ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥ ५६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राजा मन धीरज धरी, हवे हुइ मन आश ॥ त्रिहुं मिली मतो कीयो, पंथ अछे एक मास ॥ १ ॥ बावन वीर तेमावीया, बंधव अति बलवंत ॥ हुं जाशुं जात्रा भणी, भेटण तीरथ खंत ॥ २ ॥ नरवाहन राजा कहे, राजा विण शुं राज ॥ जब लगे हुं आवुं नहीं,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तां शकतिकुमरनुं राज ॥ ३ ॥ नगर देश तुमने जले, करजो सहुनी सार ॥ वीरे वचनज मानीयुं, चाल्या शुभ दिन वार ॥ ४ ॥ परदेशी साथे लीयो, देइ बहुलां दाम ॥ दीधारी देवल चढे, सीझे सघलां काम ॥ ५ ॥ त्रणे तिहांथी नीसर्या, मनकेसरी ने राय ॥ देश नगर जोतां थका, आघा मारग जाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ राग केदारो ॥ जोषीयमो जाणे ज्योतिष सार ॥ ए देशी ॥

॥ उजड वसती जोवतां रे, उलंघे बहुला घाट ॥ राय मंत्री जाणे नहीं रे, परदेशी कहे वाट ॥ राजनजी जोगी केरे रे वेश, सहुको करे आदेश ॥ रा० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ किहां संन्यासी किहां ब्राह्मणुं रे, करता रूप अनेक ॥ त्रिहुं मासे पहुता तिहां रे, बिहुं मन घणो अविवेक ॥ रा० ॥ २ ॥ नयणे नगरज निरखीयुं रे, इंद्रपुरी अवतार ॥ पवन छत्रीश तिहां वहे रे, नव जोयण विस्तार ॥ रा० ॥ ३ ॥ कनकत्रम राजा तिहां रे, पाले सुखमें राज ॥ वैरी जन आवी नमे रे, सारे उत्तम काज ॥ रा० ॥ ४ ॥ वन वाडी सहु निरखतां रे, नरवाहन नरेश ॥ मनकेसरी मुहते करी रे, नगरे कर्यो प्रवेश ॥ रा० ॥ ५ ॥ राजा ने

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मुहता जणी रे, कोइ न पूछे वात ॥ पोल मांहे मालण मिली रे, सलखू नामे विख्यात ॥ रा० ॥ ६ ॥ मालण माला कर धरी रे, कीधी बिहुंने पेस ॥ शकुन जलुं जाणी करी रे, रंज्यो मनमां नरेश ॥ रा० ॥ ७ ॥ मालणने मुद्रा दीये रे, राजा करे पसाय ॥ राजा मंत्री बिहुं जणी रे, मालण लेइ घर जाय ॥ रा० ॥ ८ ॥ मालण कर जोमी कहे रे, हुं बुं तुमारी दास ॥ ए मंदिर ए मालीयां रे, रहो सदा इहां वास ॥ रा० ॥ ए ॥ मालणने मंदिर रह्या रे, मनकेसरी ने राय ॥ नगर कुतूहल जोवतां रे, मनोवंछित ते खाय ॥ रा० ॥ १० ॥ एक दिवस राजा जणी रे, मालण जंपे आम ॥ बेसी रहो निज स्थानके रे, जो जीवणशुं काम ॥ रा० ॥ ११ ॥ राजा पूछे आदरे रे, मांमी कहो मुज वात ॥ मरण तणो जय किण विधे रे, मालण कहे अवदात ॥ रा० ॥ १२ ॥ सर्व गाथा ॥ ७४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण नगरे राजा तणी, पुत्री छे दुरदंत ॥ आठम चौदश पूनमे, नर निश्चे जु हणंत ॥ १ ॥ सोम शनिश्चर मंगले, वली चोथो रविवार ॥ इण वारे निश्चे हणे, फरे ते लहे छे मार ॥ २ ॥ राजा घर बेठो रहे,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नावे को दीवान ॥ नर ते सवि नाठा फिरे,सामो न मंडे प्राण ॥ ३ ॥ पांच दिवस लगी सामटी, देवी सक्ति जाय ॥ वाजित्र आगल वाजतां,प्रणमे देवी पाय ॥ ४ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ राग रामग्री ॥ करमपरीक्षा करण कुमर चढ्यो रे ॥ ए देशी ॥

॥ एह वचन राय मंत्री सांजली जी, शोचे हइमा मझार ॥ ए परणेवो आवे पाधरो जी, करस्यां किस्यो विचार ॥ १ ॥ कर्मपरीक्षा राय मंत्री करे जी, मंत्री बोले जी ताम ॥ हुं मनकेसरी मुहतो ताहरो जी, सारुं तुजनुं काम ॥ क० ॥ २ ॥ राजा पुत्री ते परणावशुं जी, ते करशुं तुज दास ॥ जेहनुं नाम अछे हंसावलि जी, ते तुज आणुं पास ॥ क० ॥ ३ ॥ मालण मंदिर राजा राखीयो जी, सुखे रहेजो इण ठाम ॥ दृढ मन करीने मंत्री नीकल्यो जी, करवा नृपनुं काम ॥ क० ॥ ४ ॥ देवी देहरे मंत्री आवीयो जी, मंत्री करेय प्रणाम ॥ पूजी अर्ची मंत्री विनवे जी, राखो माहरी माम ॥ क० ॥ ५ ॥ शरीर संकोची मंत्री आपणुं जी, बेठो देवीनी पूठ ॥ संध्यासमये ते हंसावलि जी, खड्ग धरी निज मूठ ॥ क० ॥ ६ ॥ नारी पंचसया परिवारशुं जी, पेठी पीठ मझार ॥ रुद्र रूप दीसे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तिहां देहरुं जी, हनुमंत करे होकार ॥ क० ॥ ७ ॥ बावन वीर तिहां बीहामणा जी, डमरु वाजे हाथ ॥ ऊरुख चढीने डाइण धसमसे जी, नाके घाली नाथ ॥ क० ॥ ८ ॥ भूत प्रेत ने व्यंतर तिहां घणां जी, जोटिंग करे ऊंकार ॥ जोगणी पीठ तिहांकिणे जागती जी, शक्ति तणी तिहां कार ॥ क० ॥ ए ॥ रुंढमुंड माथां तिहां रडवडे जी, वहे तिहां लोहीनी खाल ॥ अग्निकुंड सदा आगे बले जी, करती जालो जाल ॥ क० ॥ १० ॥ कुमरी एहवां कौतुक जोवती जी, पूजा-विधि सहु लेय ॥ बलि बाकुल ने तिलवट लापशी जी, तीन प्रदक्षिणा देय ॥ ११ ॥ सर्व गाथा ॥ ८ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ मंत्रीसर मन चिंतवे, अवसर लाधो आज ॥ शक्ति तणे सान्निध्य करी, सारीश निश्चे काज ॥ १ ॥ हुं मंत्रीश्वर तो खरो, एहने पाडुं पास ॥ ए हंसावलि हरखशुं, राय तणी करुं दास ॥ २ ॥ मुहताने मति उपनी, बोले देवी वाण ॥ अंधारे अलगां थका, चाले शे मुज प्राण ॥ ३ ॥ मंडप आवी मानिनी, हाकोटी तव हिक ॥ मत पेसे रे पापिणी, मारीश तुजने ठीक

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ४ ॥ कुमरी कपट न जाणीयुं, जाणी देवी वाच ॥ डरी कंपा शरीरे हुया, जे जंपे ते साच ॥ ५ ॥

॥ ढाल छठी ॥ राग सिंधुडो ॥ तोडी जाति ॥
॥ वीरे वखाणी राणी चेलणा जी ॥ ए देशी ॥

॥ कुमरी मनमें चिंतवे जी, देवी कोपी आज ॥ के में कीधी आशातना जी, के नवि आण्यो साज ॥ कु० ॥ १ ॥ मुज नजरे म आवे इहां जी, नावे तुं मारी पीठ ॥ जा परही तुं पापिणी जी, ताहरुं मुह म दीठ ॥ कु० ॥ २ ॥ पुरुषहत्या कीधी घणी जी, तिणे हुउं तोशुं रोष ॥ कर जोडी कुमरी कहे जी, सामिणि मुज नहीं दोष ॥ कु० ॥ ३ ॥ पूरव भव में जाणीयो जी, ज्ञान तणे परिमाण ॥ हुं पहेले भवे पक्खिणी जी, रहेती वडे उद्यान ॥ कु० ॥ ४ ॥ आंबा उपर अति भलुं जी, रहेवा कीधुं ठाम ॥ माले इंडां में मूकीयां जी, जुगल जनम्यां बे ताम ॥ कु० ॥ ५ ॥ कर्मजोगे तिहां शुं थयुं जी, लागो दव असराल ॥ सूकां नीलां तिहां बालतो जी, करतो जालो जाल ॥ कु० ॥ ६ ॥ नीयडो जव में निरखीयो जी, बालक आण्यो मोह ॥ उपर पांख पसारीने जी, मनमें धरीयो छोह ॥ कु० ॥ ७ ॥ कंत भणी में भाखीयुं जी, आणो जल तुमे जाय ॥ तरु सिंच्यां

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सहुने हुशे जी, जीवन एह उपाय ॥ कु० ॥ ८ ॥ पाणी मिष पापी गयो जी, मुज नहीं पूठी सार ॥ इंमां बलीयां अग्निमें जी, नाणी महेर लगार ॥ कु० ॥ ए ॥ संतति कारण सामिणि जी, में होमी निज काय ॥ मरण तणे मेले करी जी, कंत गयो निरमाय ॥ कु० ॥ १० ॥ जातिस्मरणे जाणीयो जी, पूरव नव विरतंत ॥ बलतां बालक मूकीने जी, नासी गयो मुज कंत ॥ कु० ॥ ११ ॥ तिण द्वेषे में मारीया जी, हणीया पुरुष अनेक ॥ देवी कहे कीधुं किस्युं जी, तुजमें नहींय विवेक ॥ कु० ॥१२॥ तुज कंते कीधुं जिस्युं जी, अवर न दूजे होय ॥ तुज कारण तिणे तनु दह्यो जी, हिये विचारी जोय ॥ कु० ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥ १०७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शक्ति मुखेथी सांजली, मात न जाणी वात ॥ अणजाण्या में पापिणी, नरनी कीधी घात ॥ १ ॥ आज पछी मारीश नहीं, चूके तोरा पाय ॥ जगते जोग उमाहीने, कुमरी स्थानक जाय ॥ २ ॥ धसमस मंत्री उठीयो, देवी बुद्धिनिधान ॥ हरूहरू तव देखी हसी, ए नर नहीं समान ॥ ३ ॥ कर जोमी मंत्री कहे, खमजो अवगुण मात ॥ तुं त्रिपुरा तुं तोतला, त्रिहुं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

भुवने विख्यात ॥ ४ ॥ तुं शीकोतर सरसती, सारे सघलां काज ॥ कोश्ल पर्वत जागती, देवी तुं हिंगलाज ॥ ५ ॥ जालंधर ज्वालामुखी, आबु तुं अंबाज ॥ उज्जेणी हरसिद्ध नमुं, राणा जाणे राज ॥ ६ ॥ हुं अपराधी ताहरो, स्तुति कीधी कर जोम ॥ स्वामिकाज साहस कीयो, पूरो मनना कोम ॥ ७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ राग आशासिंधु ॥ धर्म हैये धरो ॥ अथवा ॥ वंध्याचलनो हाथीयो रे ॥ ए देशी ॥

॥ इणे वचने तूठी सुरी रे, मागो वर अजिराम ॥ जे मागीश ते आपशुं रे, सारीश तुजनो कामो रे ॥ पुण्य सदा फले, पुण्ये वंछित होय रे ॥ पु० ॥ १ ॥ मुहतो कर जोमी कहे रे, आपो करीय पसाय ॥ विविध चित्राम करुं नलां रे, ए वर द्यो मुज मायो रे ॥ पु० ॥ २ ॥ शक्ति एक दीधी तिहां रे, जा वत्स करशुं काम ॥ देवी चरण नमी करी रे, आव्यो आपण गामो रे ॥ पु० ॥ ३ ॥ मनकेसरी मुहतो नमे रे, नरवाहनना पाय ॥ आज पठी नवि मारशे रे, देवी तणे सुपसायो रे ॥ पु० ॥ ४ ॥ पूर्व वात मांमी कही रे, हरख्यो मनमें नरेश ॥ चिंता हवे स्वामी टली रे, वंछित काज करेशो रे ॥ पु० ॥ ५ ॥ चितारो मंत्री

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हुवो रे, करे नलां चित्राम ॥ क्रय विक्रय चहुटे करे रे, प्रसिद्ध हुउं सहु गामो रे ॥ पु० ॥ ६ ॥ कुमरी दासी एकदा रे, चहुटे पुहती काम ॥ विविध रूप दीठां तिहां रे, मूल्ये लीयां चित्रामो रे ॥ पु० ॥ ७ ॥ कुमरी पासे लइ गइ रे, दीधां कुमरी हाथ ॥ हरखी हंसावलि तिहां रे, लेइ आवो जइ साथो रे ॥ पु० ॥ ८ ॥ कुमरी वचन मानी करी रे, पहुती तिहां तत्काल ॥ उठ हो इहांथी आदरे रे, काम परहां सहु टालो रे ॥ पु० ॥ ए ॥ हुं आवी तुज तेडवा रे, आवो कुमरी पास ॥ प्रसिद्धि घणी तुज सांभली रे, पूरेश्यां तुज आशो रे ॥ पु० ॥ १० ॥ केइ घोडा केइ हाथीया रे, केइ लीया आराम ॥ सिंह अने सावज घणा रे, लीयां इस्यां चित्रामो रे ॥ पु० ॥ ११ ॥ कुमरी आगे मूकीयां रे, कुमरी हुइ उल्लास ॥ विविध रूप करो इहां रे, सोहे जिम आवासो रे ॥ पु० ॥ १२ ॥ सर्व गाथा ॥ १२६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मनकेसरी मान्युं वचन, कीधो लाख पसाय ॥ ते लेइने आवीयो, प्रणमे नरवर पाय ॥ १ ॥ राय आदेश लही करी, मांड्युं करवा काम ॥ कुमरी आपे आवीने, देखाडे निज ठाम ॥ २ ॥ नल राजा जिम

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नीकळ्या, हारी सघळुं राज ॥ दमयंती साथे हुइ, वन मूकी महाराज ॥ ३ ॥ वली लंका गढ मांहीयो, रावण कीधुं रूप ॥ नव ग्रह पाये सेवता, कीधुं इस्युं स्वरूप ॥४॥

॥ ढाल आठमी ॥ देशी ललनानी ॥ धमाल रागे ॥

॥ ललना हो रामरूप कीधुं जलुं, कीधो सीता पास ॥ ललना हो लखमण बंधव ते कीयो, कीधो वली वनवास ॥ १ ॥ ल० ॥ सोवन मृग कीधो जलो, सीता वांसे धाय ॥ ल० ॥ जोगी सरूप कीयो जुउं, रावण हरि ले जाय ॥ २ ॥ ल० ॥ वांसे हनुमंत वांदरू, लंका बाली हाथ ॥ ल० ॥ समुद्र पाज बांधी तिणे, लंका कीधी अनाथ ॥ ३ ॥ ल० ॥ रामचंद्र रावण थकी, घर आणी निज सीत ॥ ल० ॥ धीज कीयो सीता सती, प्रसरी दह दिशि कित्त ॥ ४ ॥ ल० ॥ पांडवनारी अपहरी, सुती जुवन मझारि ॥ ल० ॥ पद्मोत्तर तिहां पापीए, आणी जाइ मुरारि ॥ ५ ॥ ल० ॥ श्रवण रूप कीयो सारिखो, मात पिता बेउ अंध ॥ ल० ॥ पाणी जरतां पापीए, दशरथ हणीयो कंध ॥ ६ ॥ ल० ॥ कृष्णरूप कीधुं जलुं, जिण विध हणीयो कंस ॥ ल० ॥ जीवजसा कंत तातनो, जिणे खोया बेहु वंश ॥ ७ ॥ ल० ॥ लखीया

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वन वाडी घणां, लखीयां तरु वर आंब ॥ ल० ॥ समुद्र सरोवर वावडी, मांड्यां नगर ने गाम ॥ ल० ॥ ८ ॥ नाखर लखीया नातशुं, लखीयां तेतर मोर ॥ ल० ॥ लखीयां सारस सूअडा, लखीयां चंद्र चकोर ॥ ल० ॥ ए ॥ सरप सावज मांड्या घणा, सांवर रोज शीयाल ॥ ल० ॥ गौ गज वृषभ सुहामणा, वानर देता फाल ॥ ल० ॥ १० ॥ मनकेसरी मुहते कीयो, फळ्यो फूल्यो सहकार ॥ ल० ॥ मालो पण मांड्यो तिहां, जोजो कर्म प्रकार ॥ ल० ॥ ११ ॥ सर्व गाथा ॥ १४१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बे बचडां उपर धर्यां, मात पिता बे पास ॥ दावानल लागो दहन, सघलो कीयो प्रकाश ॥ १ ॥ पाणी लेवा पंखीयो, पहोतो सरवर ठाम ॥ नारी बचडां सहु बळ्यां, पाछो आव्यो ताम ॥ २ ॥ देखीने दुःख उपनुं, झंपाणो तत्काल ॥ मोहवशे मांहे पड्यो, काल कीयो तत्काल ॥ ३ ॥ इणविध चित्रज चितर्यो, पहोतो कुमरी पास ॥ मात महेल पूरो हुवो, दीधी तसु साबाश ॥ ४ ॥ चित्रहारने चोंपशुं, दीधो बहुत पसाय ॥ धन लेइने आवीयो, नरवर प्रणमे पाय ॥ ५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल नवमी ॥

॥ कर्मविटंबणा ॥ ए देशी ॥

॥ कुमरी मंदिर निरखती रे हां, आगे दीठो तिहां सहकार ॥ कर्मविटंबणा ॥ इमां मुजने कारणे रे हां, ऊंपाणो नरतार ॥ क० ॥१॥ है! है! जोवो जोवो रे हां, जोबन खावा धाय ॥ क० ॥ कंता तें साहस कीयो रे हां, हैडे दुःख न खमाय ॥ क० ॥ २ ॥ कंता तुजने कारणे रे हां, में कर्यां पाप अघोर ॥ क० ॥ पुरुष विणाश्या पापिणी रे हां, एम करती बहुला सोर ॥ क० ॥ ३ ॥ है! है! कंता तें कीधो जिस्यो रे हां, तेहवो मुज नवि थाय ॥ क० ॥ कंता जरण तुं थयो रे हां, तें होमी निज काय ॥ क० ॥ ४ ॥ आपणपे आपे जाणीयो रे हां, पण कंत न जाणे वात ॥ क० ॥ पोपट पंखी कारणे रे हां, हुं करशुं आतमघात ॥ क० ॥ ५ ॥ कंता तुं किहां उपनो रे हां, सो जो जाणुं गाम ॥ क० ॥ तो तुजने आवी मिलुं रे हां, थापुं करीने सामी ॥ क० ॥ ६ ॥ कंत विना हुं कामिनी रे हां, कां सरजी किरतार ॥ क० ॥ देव विछोहो कां दीयो रे हां, कंत उपर दीयो खार ॥ क० ॥ ७ ॥ इम विलाप करती घणुं रे हां, मन मांहे अति दुहवाय ॥ क० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रूप देखी धरणी ढली रे हां,क्षण मांहे मूर्छाय ॥ क० ॥ ८ ॥ दासी सहु दोमी मिली रे हां, ढाले शीतल वाय ॥ क० ॥ केइ चंदन तनु घसे रे हां, केइ लूप पूछण जाय ॥ क० ॥ ९ ॥ पूछ्या जोषी पंमिता रे हां, देवरावे शनिदान ॥ क० ॥ उंट घोमा खर रंजीया रे हां, कुमरीने कंतनुं ध्यान ॥ क० ॥ १० ॥ एक कहे आणी गूगलां रे हां,नाके दीजे नास ॥ क० ॥ एक कहे सहु पाछां रहो रे हां, हुं वात कहुं विमास ॥ क० ॥११॥ चित्रहारे महोल चितर्यो रे हां, कोइ कीधो मंत्र ने तंत्र ॥ क० ॥ ए चित्रकार माकणो रे हां, कुमरी छली एकंत ॥ क० ॥१२॥ वात जणावो रायने रे हां, तेमावे तत्काल ॥ क० ॥ कूटी पीटी तेहने रे हां,आणो इहांकणे झाल ॥ क० ॥ १३ ॥ जोवणने दासी फिरी रे हां, जोवंती चित्रकार॥क०॥दीठो मालणमंदिरे रे हां,खेंची काढ्यो बार ॥ क० ॥ १४ ॥ आज अदिन थारो बापमा रे हां, तें कीधुं भूंडुं काम ॥ क० ॥ के राजा शूली दीये रे हां, के मारे तुजने ठाम ॥ क० ॥ १५ ॥ गलहछो देइ हाथशुं रे हां, केइ देता पूठे मूठ ॥ क० ॥ हीण वचन मुख भाखता रे हां, पापी तुं इहांथी उठ ॥ क० ॥ १६ ॥ मनकेसरी मन चिंतवे रे हां, रुडुं कीधुं भूंडुं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

थाय ॥ क० ॥ मानो वचन थें माहरुं रे हां, कुमरीपे लेइ जाय ॥ क० ॥ १७ ॥ मानी वात मांहे लीयो रे हां, सुणजो सहुको लोक ॥ क० ॥ काने मंत्र कही करी रे हां, कुमरीनो जांजुं शोक ॥ क० ॥ १८ ॥ लोक सहु पाछां कीयां रे हां, कुमरी पडी अचेत ॥ क० ॥ पूरव वात मांडी कही रे हां, कुमरी हुइ सचेत ॥ क० ॥ १९ ॥ हंसावलि हरखित थइ रे हां, तें मेली पियुनी वात ॥ क० ॥ कहे पियु माहरो पंखीयो रे हां, किहां अवतरीयो तात ॥ क० ॥ २० ॥ नाण तणे मेले करी रे हां, हुं जाणुं बिहुंनी वात ॥ क० ॥ पुरपयठाणे परगडो रे हां, शालिवाहन राय विख्यात ॥ क० ॥ २१ ॥ जादव वंशे परगडो रे हां, नरवाहन तेहनो पुत ॥ क० ॥ चतुरंग दलबल जेहने रे हां, देश तिणे आण्यो सुत ॥ क० ॥ २२ ॥ त्रणसें साठ अंतेउरी रे हां, रतिरूपे रंज समान ॥ क० ॥ बावन वीर सेवा करे रे हां, जसु सेवे मंत्री प्रधान ॥ क० ॥ २३ ॥ हंसावलि हर्षित हुइ रे हां, सुणी कंत तणो अवदात ॥ क० ॥ जो मुज कंतो मेलवे रे हां, तो गुण मानुं हुं तात ॥ क० ॥ २४ ॥ नरवाहन राय मेलशुं रे हां, तुं मान विशवावीश ॥ क० ॥ परणावुं परगटपणे रे हां, जो करशे जगदीश

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ क० ॥ २५ ॥ मंत्री वली बोले इस्युं रे हां, अलगो पुरपैठाण ॥ क० ॥ विच समुद्र विच जुंइ घणी रे हां, केम आवे इहां जान ॥ क० ॥ २६ ॥ राजाने हुं आणशुं रे हां, एकाकी इणे ठाम ॥ क० ॥ एक मासने आंतरे रे हां, सारीश तुजनुं काम ॥ क० ॥ २७ ॥ धन दीधुं कुमरी घणुं रे हां, लीधुं करीय प्रणाम ॥ क० ॥ स्वयंवरमंरुप मांरुजो रे हां, वांसे करजो थें काम ॥ क० ॥ २८ ॥ मागी शीख सनेहशुं रे हां, बिहुं मन आनंदपूर ॥ क० ॥ ढाल हुइ दशमी इहां रे हां, कहे श्रीजिनोदय सूरि ॥ क० ॥ २९ ॥ सर्व गाथा ॥ १७५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राजा पासे आवीयो, जिहां रहेवानुं गेह ॥ तुज कुमरी परणावशुं, मास दिवसने छेह ॥ १ ॥ गुप्तपणे रहेजो इहां, को नवि जाणे वात ॥ मास दिवस पूरो हुवे, होशे तिहां विख्यात ॥ २ ॥ कुमरी कहायो तातने, तेडावो राजान ॥ संवरमंरुप मांडशुं, देजो अमने मान ॥ ३ ॥ राजा मन आनंद हुउं, कुमरी वरनी चूंप ॥ ठाम ठामथी तेडीया, वडा वडा तिहां भूप ॥ ४ ॥ संवरमंरुपे सहु मिल्या, रुद्धिवंत राजान

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ हयवर गयवर हींसता, लोक तणा नहीं ज्ञान ॥ ५ ॥ सत्यावीश दिन इम गया, कुमरी जोवे वाट ॥ जल विण मछी टलवले, खिण खिण करे उच्चाट ॥ ६ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ राग खंत्रायती ॥ लाखा फुलाणीना गीतनी देशी ॥

॥ कुमरी मन दुहवाय, अणविचार्युं हो कंता में कीयुं ॥ वरस समो दिन जाय, दुःखे नहीं फाटे हो कंता मुज हियुं ॥ १ ॥ खिण बाहिर खिण मांहि, गोंख चढी हो कुमरी वलवले ॥ सो धन्य दिन ने मास, पूरव जवनो हो कंतो मुज आवी मिले ॥ २ ॥ फट्ट ऋूंडा चित्रकार, बोल न पाल्यो हो किम तें ताहरो ॥ लोज धरी मन मांहि, धन लीधो हो कपटे तें माहरो ॥ ३ ॥ अवधि कही एक मास, जइने हो कुंवर हुं आणुं इहां ॥ हजी शे न आव्यो तेह, मुज कारण हो राय आवे किहां ॥ ४ ॥ तेम्राव्या सहु राय, संवरा हो मंरूप सहु आवी मळ्या ॥ बिहुं दिन पहिली जाय, दीठो हो चित्रहारो कुमरी दुःख टळ्यां ॥ ५ ॥ कहे चितारानें वात, नरवाहन राजा हो कब इहां आवशे ॥ आयो मोरी मात, दीठ हो राजाने सहुए वधा-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वशे ॥ ६ ॥ सांनल तुं चित्रकार, राजाने हो पासे रहेजे ढुकडो ॥ जिम घालुं गले माल, राजाने हो जाणुं सहु मांहे वडो ॥ ७ ॥ सहु मनावी वात, कुमरी हो आवी आपणे मंदिरे ॥ पहेरी सोल शृंगार, राजा हवे हो बहु उब्बव करे ॥ ८ ॥ मलीया घणा नरिंद, हंसावलि आवे हो कुमरी हरखशुं ॥ नरवाहन तिहां राय, कुमरी हो जाणे कंतो निरखशुं ॥ ए ॥ वरमाला लेइ हाथ, जोतां हो चितारो नयणे निरखीयो ॥ माला घाली कंठ, राजा ने राणी हो मनमां हरखीयां ॥ १० ॥ नगरे हुउं उत्साह, परणी हो हंसावलि राजा हेलमें ॥ जीमाड्या सहु राय, राजापे हो राणी बे पहुतां महेलमें ॥ ११ ॥ दीधा बहुला देश, दीधा हो राजाने हयवर हींसता ॥ दीधा गयवर थाट, धवला हो ऐरावण सरिखा दीसता ॥ १२ ॥ दीधां दासी ने दास, दीधी हो राजाने सखरी अति घणी ॥ मागे शीख सनेह, चाल्या हो राजेसर आपणी चुंइ नणी ॥ १३ ॥ नले दिवसे नले वार, आया हो राजेसर परणी नारीने ॥ घुरीया निशाणे घाव, आयो जो मंत्रीश्वर काम समारीने ॥ १४ ॥ सर्व गाथा ॥ १ए५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ मनकेसरी मुहता जिस्या, पूरा हुवे प्रधान ॥ राजानी चिंता हरे, मेले नवे निधान ॥ १ ॥ बुद्धिमंत पासे हुवे, सारे सघलां काज ॥ नरवाहन मंत्री जणी, द्ये एक देशनुं राज ॥ २ ॥ राज धुरंधर रायने, मुहता समो नहीं कोय ॥ काज समारे स्वामीनां, जो बुद्धि बहुली होय ॥ ३ ॥ नरवाहन राजा सदा, पूरव पुण्य पसाय ॥ राणीशुं सुख जोगवे, चिंता नहीं मन कांय ॥ ४ ॥ पहिलो खंड पूरो हुवो, कहे श्रीजिनोदय सूरि ॥ जणे गुणे श्रवणे सुणे, तिण घर आनंदपूर ॥ ५ ॥ सर्व गाथा ॥ २०० ॥ इति श्रीहंसवच्छप्रबंधे रायमंत्रिपरदेशगमनमंत्रिकृतबुद्धिचित्रकारकेलवणहंसावलिपाणिग्रहणनामा प्रथमः खंडः संपूर्णः ॥ १ ॥

॥ खंड बीजो ॥

॥ दोहा ॥

॥ हिव बीजो खंड बोलशुं, श्रीजयतिलक पसाय ॥ दऊदार दूरे करे, तुसे सरसती माय ॥ १ ॥ हंसावलि राणी समी, नगर नहीं को नारी ॥ दान शील तप जाव गुण, जाणे सहुअ विचार ॥ २ ॥ हंसावलि राणी तणे, गर्भ हुवा बे बाल ॥ केलिगर्भ तिण सारिखा, अंगे अति

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सुकुमाल ॥ ३ ॥ जन्मकाल राजा हिवे, लेइ दासी साथ ॥ बे बालक लेइ करी, चाल्यो पृथ्वीनाथ ॥ ४ ॥ ॥ ढाल पहेली ॥ राग गोडी ॥ मन भमरानी देशी ॥

॥ पुत्र बेइ निज निरखतो, राय मन हरख्यो रे ॥ पहुतो वनह मझार, राय मन हरख्यो रे ॥ रूंख तले लेइ मूकीया ॥ रा० ॥ बोल्या देव प्रकार ॥ रा० ॥ १ ॥ ए बालक रुडा तमे ॥ रा० ॥ राखो रुडी रीत ॥ रा० ॥ ए बालक सघले सदा ॥ रा० ॥ दश दिशि हुशे विख्यात ॥ रा० ॥ २ ॥ गुप्तपणे ए राखजो ॥ रा० ॥ किणही दाय उपाय ॥ रा० ॥ बेइ बालक लेइने ॥ रा० ॥ आपणे मंदिर जाय ॥ रा० ॥ ३ ॥ राणीने आणी दीया ॥ रा० ॥ कीधां जन्मनां काज ॥ रा० ॥ हंसराज नाम थापीयुं ॥ रा० ॥ वडो भाइ वत्सराज ॥ रा० ॥ ४ ॥ मनकेसरी राय तेमीयो ॥ रा० ॥ आव्यो बुद्धिनिधान ॥ रा० ॥ जतने बालक राखवा ॥ रा० ॥ जंपे इम राजान ॥ रा० ॥ ५ ॥ बावन वीर बुद्धि आगला ॥ रा० ॥ तेहनो नहीं वेसास ॥ रा० ॥ बिहुं कुमरने जाणशे ॥ रा० ॥ तो करशेज विनाश ॥ रा० ॥ ६ ॥ मनकेसरी मुहतो कहे ॥ रा० ॥ करशुं कुमरने खेम ॥ रा० ॥ परदेशे एने राखशुं ॥ रा० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रुमी परे राय एम ॥ रा० ॥ ७ ॥ शुभ मुहूर्त्त शुभ वासरे ॥ रा० ॥ पुरोहित पुत्र दीयो साथ ॥ रा० ॥ पांच धाइ प्रतिपालजो ॥ रा० ॥ लेजो हाथो हाथ ॥ रा० ॥ ८ ॥ साथे संबल घालीयां ॥ रा० ॥ घाल्यां बहुलां दाम ॥ रा० ॥ रहेतां को जाणे नहीं ॥ रा० ॥ रहेजो तेवे ठाम ॥ रा० ॥ ए ॥ शीखामण देइ करी ॥ रा० ॥ लेइ चाल्या परदेश ॥ रा० ॥ नगर नलुं देखी करी ॥ रा० ॥ कीधो तिहां प्रवेश ॥ रा० ॥ १० ॥ शुभ नगरे रहेतां थका ॥ रा० ॥ वर्ष हुआं जव पांच ॥ रा० ॥ बेहु जणावण मांमीया ॥ रा० ॥ ते न करे खल खांच ॥ रा० ॥ ११ ॥ पुरुष तणी बहोंत्तर कला ॥ रा० ॥ शीख्या थोडे काल ॥ रा० ॥ नारी तणी चोसठ कला ॥ रा० ॥ वली शीखी रागमाल ॥ रा० ॥ १२ ॥ शस्त्र तणी शीखी कला ॥ रा० ॥ शीखी सघली जाख ॥ रा० ॥ पनर वर्ष पूरां हुआं ॥ रा० ॥ सघलां केरी शाख ॥ रा० ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥ २१७ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ राग मारु ॥ नल नगरीथी नीसर्यो रे राय ॥ ए देशी ॥

॥ जिण दिन कुमर बे मूकीया रे राय, राणी दुइ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

निराश ॥ नूख तृषा सहु विसरी रे राय, कुमर न देखुं रे पास ॥ १ ॥ ससनेही राय, एक घमी रे छ मास ॥ बिहुं कुमर विण किम करुं रे राय, दीठे पूगे आश ॥ वाह्लेसर राय, एक घमी रे छ मास ॥ ए आंकणी ॥ २ ॥ तेमावो पुत्र बे माहरा रे राय, आणो मुजनी रे पास ॥ पुत्र न देखुं जां लगे रे राय, तां लगे रहुं रे उदास ॥ स० ॥ ३ ॥ जिण दिन नयणे निरखशुं रे राय, सो मुज दिहाडो धन्य ॥ राय कहे राणी नणी रे राय, कर रुडुं तुं मन्न ॥ स० ॥ ४ ॥ राणीने धीरज दीयो रे राय, मूक्या तेमवा ठेठ ॥ मछी जिम ते टलवले रे राय, दोहिलुं जगमें पेट ॥ स० ॥ ५ ॥ पनर वरष पूरां हुवां रे राय, आया पुरपेठाण ॥ दीधी पुरोहित वधामणी रे राय, बेठा सहु दीवान ॥ स० ॥ ६ ॥ महोत्सव करी मांहे लीया रे राय, घुस्या निशाने घाव ॥ घर घर गूमी उछले रे राय, प्रणमी तातना पाय ॥ स० ॥ ७ ॥ सहु जनने अचरिज हुवो रे राय, कदहीं न सुणीया एह ॥ ए अलगा किम मूकीया रे राय, एवी नेहनी देह ॥ स० ॥ ८ ॥ खोले बेहु बेसामीया रे राय, पूछे पंमित वात ॥ लगन जोवो थें रुअडो रे राय, जाय मिले निज मात ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

स० ॥ ए ॥ जोयां लगन मिली ज्योतिषी रे राय, बोले सहुअ विचार ॥ विहाण सरिखो को नहीं रे राय, आखे वरष मझार ॥ स० ॥ १० ॥ तहत्ति वचन सहुए कीयो रे राय, मान्यो जोषीनो बोल ॥ इण दिवस मलीया थकां रे राय, होशे सही रंगरोल ॥ स० ॥ ११ ॥ सहुको जन थानक गयां रे राय, कीधो नूप पसाय ॥ रतन दम्भो ते आपीयो रे राय, उलट अंग न माय ॥ स० ॥ १२ ॥ सर्व गाथा ॥ २२ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ राय पासे नोजन कीयो, बोले बावन वीर ॥ जाशुं नदीए नरबदा, जोस्यां जोर शरीर ॥ १ ॥ दम्भो लेइने चालीया, मलीया नरना थाट ॥ कीमीनगरांनी परे, वहेता मारग वाट ॥ २ ॥ हंस वच्छ एकण दिशे, इक दिशि बावन वीर ॥ जूझे मूजे धसमसे, नदी नरबदा तीर ॥ ३ ॥ जे जण आगल हारशे, सो पमशे सहु पाय ॥ लहुम वमाइ को नहीं, शंका म करो कांय ॥ ४ ॥ मेघनाद सहुमें वमो, बीजा नामी नोम ॥ काल नयंकर नुंनोलो, शंखचूम शुलिमोम ॥ ५ ॥ नीम नयंकर पांडुरो, बमनल ने विखमोम ॥ गोरमो गुणवंतो वली, सबलो संकलतोम ॥ ६ ॥ नगरफाम धरनि-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

धरऊ, सकलिगल हनुमंत ॥ जलयंत्रधिगुरु रुधिर वष, ऊांजशु कपूरदंत ॥ ७ ॥ नरमोऊ लंगो गुणगुहिर, अकलंक धिंगऊ मास ॥ नैरव नूतशिला नलो, कालरूप सुखवास ॥ ८ ॥ लोहिताक्ष ने बाबरो, जस बल अधिक शरीर ॥ कालपीठ ने जंगऊो, गरगतीयो धरधीर ॥ ए ॥ अग्निजाल ने आगीयो, चाचरीयो चोमुख ॥ लोहखरो ने नूचरो, देतो दादर डुःख ॥१०॥ शक्तिकुमर ते सामटा, सघले मानी हार ॥ वीर सहु मन खलनल्या, हुउं किस्यो प्रकार ॥ ११ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ राग सिंधू ॥ चरणाली चामुंमा रण चढे ॥ ए देशी ॥

॥ वीर सहु मन चिंतवे, ए हुवा आपण सालो रे ॥ पांचे दिन जातां थका, इहांथी आपणो कालो रे ॥ वी० ॥ १ ॥ बावन वीरे शुं कीयो, पहुता देवी पासो रे ॥ हम सेवक सहु ताहरा, पूर हमारी आसो रे ॥ वि० ॥ २ ॥ हंसावलि राणी तणा, बेहु हुआ अंगजातो रे ॥ बल बुद्धि गुण आगला, हुवा सहु विख्यातो रे ॥ वी० ॥ ३ ॥ बे बालकनो वध करो, के करो घणा सचिंतो रे ॥ देशवटो दूरे दीयो, अमने करो निचिंतो रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ शक्ति कहे तुमे सांनलो,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मार्या न मरे मर्मो रे ॥ एउंनुं चुंडुं नवि हुवे, पोते पूरो धर्मो रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ चिंतातुर करशुं घणा, चूकावुं इण गामो रे ॥ मात तातथी चूकवुं, शक्ति सही शुभ नामो रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ इण वचने सहु सुखी हुआ, पहुता रामत काजो रे ॥ शक्ति देवी तिहां शुं कीयो, पहुती जिहां हंसराजो रे ॥ वी० ॥ ७ ॥ दमो उठाव्यो दावशुं, देवी अदृष्ट ते कीधो रे ॥ बे बांधव जोता फिरे, एको काम न सीधो रे ॥ वी० ॥ ८ ॥ गाम गाम जोयो घणो, किहांही न लाधी वातो रे ॥ वीर कहे वत्सराजने, कुण उत्तर देशां तातो रे ॥ वी० ॥ ए ॥ एक भणे वत्स सांभलो, दमो गयो राजलोको रे ॥ तिहां जाइ आणो तुमे, जिम भांजे मन शोको रे ॥ वी० ॥ १० ॥ हंस भणे वत्सराजने, द्यो मुजने आदेशो रे ॥ तुम प्रसादे हुं आणशुं, करशुं काम विशेषो रे ॥ वी० ॥ ११ ॥ सुण भाइ मुज विनति, पहोंचो लेवा काजो रे ॥ विलंब तिहां करवो नहीं, शीख दीये वत्सराजो रे ॥ वी० ॥ १२ ॥ त्रणसें साठ अंतेउरी, आपणी तिहां छे मातो रे ॥ मान वचन तुं माहरुं, म करे कांइ तुं वातो रे ॥ वी० ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥ २५३ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ मागी शीख सनेहशुं, पहोतो तिहां कुमार ॥ राजलोक राजा तणो, उन्नो पोलि दुवार ॥ १ ॥ तेहवे दासी नीकली, दीठो पुरुष प्रधान ॥ राणीने आवी कहे, द्यो एक अमने मान ॥ २ ॥ आवो जुवो आंगणे, कुण नर उन्नो बार ॥ राणी नजर नीहालीयो, रीस धरी तेणी वार ॥ ३ ॥ रोष नरी राणी कहे, नर-वाहन मुज स्वामी ॥ जो उन्नो तुज जोअशे, सजी ते मारशे ठाम ॥ ४ ॥ ढारायत इम विनवे, तुम सरिखो जो जोइ ॥ के नाणेज नतीजको, के बंधव बेटो होइ ॥ ५ ॥ राणी वातज सांनली, आयो पुत्र ठे आज ॥ दासी वचनज मानीयुं, के हंस के वत्सराज ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ राग सोरठ ॥ देशी बयत्तनी ॥ राजाइ लावे बलनड नार ॥ ए देशी ॥

॥ राणीने करे रे जुहार, राणी हरखी तिण वार ॥ हंसावलि लीधो हरखे, वार वार पुत्रपे निरखे ॥ १ ॥ मनरंगे कुमर वधाया, नली होइ तुमे इहां आया ॥ पूछे वत्सराजनी वात, नेटशे ते विहाणमें मात ॥ २ ॥ आज दिवस अठे माय नूंको, पण

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

विहाणे अहे दिन रुडो ॥ तुं कांइ मिल्यो वत्स आज, कुमुहूर्त्तें विणसे काज ॥ ३ ॥ मा जेव्यां आणंद थाय, मा जेव्यां पातक जाय ॥ मात आयो हुं हुं काज, इम जंपे हे हंसराज ॥ ४ ॥ सवा कोमी दडो इहां आयो, तिणे वांसे मा हुं धायो ॥ हवे शीख दीयो मुज माइ, दमो जोउं इहांथी जाइ ॥ ५ ॥ ते दडो उंरहो जो लीजे, वत्सराज जाइने दीजे ॥ इम शीख दीधी तिहां माय, जननीने लागो पाय ॥ ६ ॥ माता मंदिरे जाय, दमो तिम तिम आघो धाय ॥ ते तिहां किहां नहीं पायो, जोइ जोइने पाछो आयो ॥ ७ ॥ हंसराज हुवो उदास, एक मंदिर दीतुं पास ॥ विविध तिहां वाजां वाजे, जेणे करी अंबर गाजे ॥ ८ ॥ सामी एक आवी दासी, हंसराज पूछे विमासी ॥ कहे किणनुं छे ए गेह, मुजने भाखो सवि तेह ॥ ए ॥ तव दासी बोली आम, लीलावती राणी नाम ॥ राजानुं छे बहु मान, इण घर ऋद्धि तणुं नहीं ज्ञान ॥ १० ॥ तेहनो ए छे आवास, सहु वात कहे इम दास ॥ गयो तिहां राज-कुंमार,राणीने करे जुहार॥११॥राणीने कुमरे निरखी, इंद्राणी अपछर सरखी ॥ राणी पण दीठो कुमार, एहवो नर नहीं संसार ॥ १२ ॥ एहशुं जोगवो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ये जोग, जो पुण्य मले संयोग ॥ राणी कीधा सोले शणगार, आव्या जिहां हंसकुमार ॥ १३ ॥ आवीने कुमरने निरखे, हावजाव करे मन हरखे ॥ मुख चंद्र-कला जिम सोहे, नर नारी तणां मन मोहे ॥ १४ ॥ भुजदंम जिस्या जंकाली, सोहे सोल वरसनी बाली ॥ आंखमली अति अणीयाली, कज्जल जिम कीकी काली ॥ १५ ॥ सोहे कीर जिसी मुख नासा, जलां वस्त्र सुगंध सुवासा ॥ काने बिहुं कुंमल दीपे, जाणे शशी सूरज जीपे ॥१६॥ लीलावती चाले ठमके, पाय नेउर घूघर घमके ॥ कटिमेखला घूघरीयाली, सहीयरशुं देती ताली ॥ १७ ॥ कंठे पहेर्यो नवसर हार, राणी रति तणे अनुहार ॥ करकंकण मोती जडीयां, जाणे आप विधाता घमीयां ॥ १८ ॥ कवि उपमा केहवी आखे, राणी हवे किस्युं नाखे ॥ तोशुं मोरी प्रीति अपार, ए जाणे परमेसर सार ॥ १९ ॥ सर्व गाथा ॥ २७९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हंस दीठे हरखित हुइ, नवि मूके ते ठाम ॥ मुख निशासा मूकती, किस्युं न करे काम ॥ १ ॥ काम थकी सीता हरी, रावण ले गयो लंक ॥ दश शिर रावण छेदीयां, काम तणा ए वंक ॥ २ ॥ कामवशे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

द्रौपदी हरी, पांचे पांडव नार ॥ कृष्णबले आणी सती, दोहिलो काम संसार ॥ ३ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ सीताने संदेशो रामजीए मोकल्यो रे ॥ अथवा ॥ निंदा म करजो कोइनी पारकी रे ॥ ए देशी ॥

॥ हंसकुमर राणीने कहे रे, में कीधो तुमने जुहार रे ॥ मुज आशीष न दीधी तुमे रे, कहो मुज किस्यो प्रकार रे ॥ हं० ॥ १ ॥ ढोरु कुढोरु हुवे सदा रे, मा बाप न धरे रीस रे ॥ अणख आया माटे शुं करे रे, माय बाप धूणें शीश रे ॥ हं० ॥ २ ॥ कार लोपी कहे कामिनी रे, न गणे सगपण लाज रे ॥ रीस नहीं कांइ माहरे रे, माहरे छे तुजशुं काज रे ॥ हं० ॥ ३ ॥ सगो पुत्र नहीं तुं माहरो रे, हुं तुज शोकी मात रे ॥ इण सगपण कांहिं नहीं रे, अंतर दिन ने रात रे ॥ हं० ॥ ४ ॥ हंस भणे हुं आवीयो रे, रतन दडाने काम रे ॥ राजलोक में जोइयो रे, फिरीयो गामो गाम रे ॥ हं० ॥ ५ ॥ तेह दमो गयो हाथथी रे, तेहनी छे मुज चिंत रे ॥ राणी कहे ते आपशुं रे, जो मुज धरशो प्रीत रे ॥ हं० ॥ ६ ॥ राणी दमो देखाडीयो रे, तो आपुं हुं तुज रे ॥ महारी वात

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मानो खरी रे, मति लोपे तुं मुज रे ॥ हं० ॥ ७ ॥ जंघा मांस मीतुं घणुं रे, कांइ आपणपे न खवाय रे ॥ मात विचारी जुवो तुमे रे, ए काम मुजथी न थाय रे ॥ हं० ॥ ८ ॥ कुमर कहे कामी जिको रे, ते थाय सदाइ अंध रे ॥ हित युगति जाणे नहीं रे, न लहे मर्मनो बंध रे ॥ हं० ॥ ए ॥ सर्व गाथा ॥ २९१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ लीलावती राणी जणे, अंतर नहीं को देह ॥ बाप बेटी सासु वहू, नणंद जाणेजी तेह ॥ १ ॥ कामविकारे कामिनी, न गणे अंतर कोय ॥ बहेन जाइ माता सुता, चूकावे नर सोय ॥ २ ॥ वेदसार ब्राह्मण तणी, कामलुब्धी घर नार ॥ वेदविचक्षण पुत्रशुं, चूकी करे संसार ॥ ३ ॥ आदिनाथ अरिहंतजी, सगी बहेन घरवास ॥ रहनेमि राजीमती, रहीयां मनहिं विमास ॥ ४ ॥ पाप नहीं को कुमरजी, मोशुं धर तुं राग ॥ मान वचन तुं माहरुं, जो होय पोते जाग ॥ ५ ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ राग केदारो ॥ सोलमो शांति जिनवर नमुं ॥ अथवा ॥ स्वामी सीमंधर विनति ॥ ए देशी ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ताहरुं रूप देखी करी,उपनो मुज मन मोह रे॥ दीन वचन मुख भाखती, लोचन भरी मुख जोह रे॥ ता० ॥ १ ॥ जलचर जीव जिम जल विना, मरण लहे ततकाल रे ॥ तिम तुज विरहे हुं आकुली, कामदुःख परहुं तुं टाल रे ॥ ता० ॥ २ ॥ नमन करी खोलो पायरे, नयणे न खंडे (राणी) धार रे॥ माहरे जीवन तुं सही, कर हवे मुज तणी सार रे ॥ ता० ॥ ३ ॥ वचन माहरुं तुमे मानशो, आपशुं तुज भणी राज रे॥ कुमर ए वचन सुणी कोपीयो, बोलीयो तव हंसराज रे॥ ता० ॥ ४ ॥ इण भवे मात तुं माहरी, मुज थकी किम पडे वंश रे॥ समुद्र मर्यादाथी जो मिटे, अगनि झरे जो शशंक रे॥ ता० ॥ ५ ॥ पश्चिम सूर जो उगमे,धरणी रसातल जाय रे॥ सायर मीतुं जो जल हुवे, तो मुज काम न थाय रे ॥ ता० ॥ ६ ॥ कुमर भणी कहे मानिनी, मान तुं माहरी वात रे॥ तुठीय सुख तुज पूरशुं, रूठीय करशुं तुज घात रे॥ ता० ॥ ७ ॥ कुमर भणे सुण मातजी, रुडे भूंडुं किम थाय रे॥ मिश्री खातां थका दंत जो, पडी जाय तो जाय रे॥ ता० ॥ ८॥ कुमरजी साहस आदरी, लोपी मातनी लाज रे॥ हाथथी खेंची

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दमो लीयो, चाल्यो लेइ हंसराज रे ॥ ता० ॥ ए ॥
राणीए कौतुक जे कीयां, कहेतां न आवे लेह रे ॥
लाज मर्यादा मूकी करी, आप वलूरीयो देह रे ॥
ता० ॥ १० ॥ शोक्यना पुत्रने सामटा, बेहु मरावशुं
ठाम रे ॥ नाम लीलावती तो खरी, जो करुं एहवुं
काम रे ॥ ता० ॥ ११ ॥ कंचुउं फाडी कटका कीयो,
फाडीयुं सुंदर चीर रे ॥ उंधे मुखे पडी खाटले, सर्व
संकोची शरीर रे ॥ ता० ॥ १२ ॥ एम उपाय राणी
करी, कीधुं कपट अपार रे ॥ सोलमी ढाल पूरी हुइ,
कहे श्रीजिनोदय सार रे ॥ ता० ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥ ३०ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ लीलावती राणी तणे, मंदिर आयो राय ॥
राणी किहां देखी नहीं, मंदिर खावा धाय ॥ १ ॥ पूछे
राय सहेलीयां, राणी नहीं आवास ॥ कर जोडी
दासी कहे, राणी अछे उदास ॥ २ ॥ उंरा मांहि अलगी
थकी, सूती छे तिहां जाइ ॥ वात सुणीने शंकीयो,
पहोतो राजा धाइ ॥ ३ ॥ कहे राणी सूती किमे,
कहे तुं मननी वात ॥ पटराणी तुं माहरी, तोशुं
अधिकी प्रीत ॥ ४ ॥ बोलावी बोले नहीं, खेंच्युं राये
चीर ॥ ससराजी थें सांभलो, मूको महारुं चीर ॥ ५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हंस तणी हुं नारजा, तिण ससरा थें थाय ॥ अलगा रहेजो अम थकी, मनमें चिंते राय ॥ ६ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ कोयलो पर्वत धुंधलो रे लाल ॥ ए देशी ॥

॥ राणी वचनज सांभल्युं रे लाल, राजा रह्यो विमास रे ॥ बालूआ ॥ सिंह तणां जे वाछडां रे लाल, कहो किम खाये घास रे ॥ बा० ॥ रा० ॥ १ ॥ पर-नारी बंधव हुता रे लाल, गंगाजल जिम पूत रे ॥ बा० ॥ जादव वंशे उपना रे लाल, कीधो केहो सूत रे ॥ बा० ॥ रा० ॥ २ ॥ नजर नरी राय जोइयुं रे लाल, फाड्युं सुंदर चीर रे ॥ बा० ॥ कंचुको ते काढीयो रे लाल, देखामीयुं ते शरीर रे ॥ बा० ॥ रा० ॥ ३ ॥ ते देखीने शंकीयो रे लाल, मीठो सहु ए कूरु रे ॥ बा० ॥ गुणथी अवगुण मानीयो रे लाल, नंनेरी कीयो घूरु रे ॥ बा० ॥ रा० ॥ ४ ॥ इंधण घृत जिम घालीयां रे लाल, अधिको अग्नि दीपाय रे ॥ बा० ॥ राणी तणे वचने करी रे लाल, धमधमीयो नर राय रे ॥ बा० ॥ रा० ॥ ५ ॥ दासी तेडवा मोकली रे लाल, पहोती मुहता पास रे ॥ बा० ॥ साद दीये छे स्वामीजी रे लाल, राणी तणे आवास रे ॥ बा०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ रा० ॥ ६ ॥ मनकेसरी मुहते तिहां रे लाल, आवी कीयो जुहार रे ॥ बा० ॥ राणी वात सहु कही रे लाल, मुहतो करे विचार रे ॥ बा० ॥ रा० ॥ ७ ॥ राणीए शरीर वलूरीयुं रे लाल, नहीं कोइ पुरुषनो हाथ रे ॥ बा० ॥ स्त्रीयां अनरथ उपजे रे लाल, जंजेरयो इणे नाथ रे ॥ बा० ॥ रा० ॥ ८ ॥ राय कहे मंत्री सुणो रे लाल, मारो ए बेहु पूत रे ॥ बा० ॥ ढील इहां करवी नहीं रे लाल, राख्यो न रहे सूत रे ॥ बा० ॥ रा० ॥ ए ॥ मनकेसरी मुहतो कहे रे लाल, कूडो म करो रोष रे ॥ बा० ॥ नारी वचन नवि मानीए रे लाल, कुमरनो नहीं को दोष रे ॥ बा० ॥ रा० ॥ १० ॥ अण-विचार्युं नवि कीजीए रे लाल, कीजे काम विचार रे ॥ बा० ॥ दोष दइ शिर उपरे रे लाल, नारी चरित्र अपार रे ॥ बा० ॥ रा० ॥ ११ ॥ जोजोने नर पंमिता रे लाल, सुसर मनावी हार रे ॥ बा० ॥ वेगवती वली ब्राह्मणी रे लाल, दोष दीयो अणगार रे ॥ बा० ॥ रा० ॥ १२ ॥ इम जाणी नवि कीजीए रे लाल, हंस न दीजे ठेह रे ॥ बा० ॥ पांचे दिन जातां थका रे लाल, इणथी रहेशे गेह रे ॥ बा० ॥ रा० ॥ १३ ॥ कर्म मेले बे किहां वध्या रे लाल, पनर वरष परदेश रे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ बा० ॥ राय चरणे इहां आवीया रे लाल, कर्मे कीयो प्रवेश रे ॥ बा० ॥ रा० ॥ १४ ॥ सर्व गाथा ॥ ३३९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राजा राणी बेहु जणे, मूल न मानी वात ॥ वार वार मत पूछजो, करजो बिहुंनी घात ॥ १ ॥ राय कहे तिम पाधरो, पासो पडे ते दाव ॥ निर्धन पुरुषनुं बोलवुं, जाणे वायो वाय ॥ २ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ देशी मधुकरनी ॥ धन सार्थवाह साधुने, दीधुं घृतनुं दान ॥ ललना ॥ राग जयश्री ॥

॥ राय जणे मुहता जणी, काम करो हवे जाय ॥ राजा ॥ राणी दुःख दूरे करो, शंका म करो कांय ॥ रा० ॥ १ ॥ राणीनुं मन राखवा, कुमर उतार्यो मोह ॥ रा० ॥ राजा राणीने कारणे, मन मांहे धरतो कोह ॥ रा० ॥ २ ॥ मनकेसरी मन दृढ करी, लागो राणी पाय ॥ रा० ॥ बे बालक मार्यां थकां, लोके फट् फट् थाय ॥ रा० ॥ ३ ॥ कहे राणी मुहता जणी, जो तुज जीवण काज ॥ रा० ॥ बे जिम त्रीजो मेलशुं, नहीं गणशुं तुज लाज ॥ रा० ॥ ४ ॥ मनकेसरी मन शंकीयो, जिम कहीए तिम साच ॥ रा० ॥ काम करुं हवे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मातजी,मानजो तमे मुज वाच॥ रा०॥ ५ ॥ राजा राणी बे जणां, मान्यो मन संतोष ॥रा०॥ मनकेसरी मुहतो कहे,मत देजो मुज दोष॥ रा०॥ (पाठांतरे)॥ नयणे नयण देखामजो,झाझो राजा शोष॥ रा०॥६॥लइ बीडुं मंत्री चल्यो, आयो कुमरो पास ॥ रा० ॥ मनकेसरी तिहां मांमीने, सघलो कीधो प्रकाश॥ रा० ॥ ७॥ बार रतन साथे दीयां,दीधा हयवर दोय ॥ रा० ॥ प्रछन्न-पणे दोउ काढीया, कर्म तणी गति जोय ॥ रा० ॥ ८ ॥ साथे संबल घालीयो, घाल्यां बहुलां दाम ॥ रा० ॥ हित शिखामण देइने, नीसरीया आराम ॥ रा० ॥ए॥ मनकेसरी मुहता तणे,बेहु जण लागा पाय ॥रा० ॥ जीवदान थाहरो दीयो, ते ऊरण किमहिं न थाय ॥ रा० ॥ १० ॥ आंखे आंसु नाखतां, मूकंता निशास ॥ रा० ॥ हंसावलि राणी जणी, मलवा हुती आश ॥ रा० ॥ ११ ॥ माणस मन मांहि चिंतवे,मनोवंछित पूरेश ॥ रा० ॥ दैव जणे रे बापमा, हुं तुज अवर करेश ॥ रा० ॥ १२ ॥ पुण्य विहुणां माणसां, चिंत्युं निष्फल थाय ॥ रा० ॥ जिम कूवामां गांयमी, आल माल होइ जाय ॥ रा० ॥ १३ ॥ मनकेसरी कहे सांजलो, रोयां न लाजे राज ॥ रा० ॥ करतां दृढ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मन आपणुं, सीझे वंछित काज ॥ रा० ॥ १४ ॥ सर्व गाथा ॥ ३४५ ॥

॥ दोहा ॥ गोरी राग मध्ये ॥

॥ एम शिखामण देइने, वलीयो पाछो गेह ॥ मन-केसरी मन चिंतवे, राखुं सघली रेह ॥ १ ॥ दोइ मृग हणीयां तिहां, पारधी दीठो एक ॥ तेहनां नेत्र मागी लीयां, मनमें आणी विवेक ॥ २ ॥ ते लोचन लेइ करी, पहोतो राणी पास ॥ लोचन लेइ आगे धर्यां, कीधो सहु प्रकाश ॥ ३ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ नायकानी देशीमां ॥

॥ राणी लोचन देखीने रे लाल, धरीयो अंग उल्लास रे ॥ लीलावती ॥ महारुं जाण्युं में कीयुं रे लाल, पहोंचाड्या स्वर्गवास रे ॥ लीलावती ॥ रोष धरी मन चिंतवे रे लाल ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कहे राणी लीलावती रे लाल, कहो मुहता एक वात रे ॥ ली० ॥ किण स्थानके लेइ जइ रे लाल, कीधो बेहुनो घात रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ २ ॥ कहे मंत्री सुणो मातजी रे लाल, आंखे पाटा बांध रे ॥ ली० ॥ रण मांहे ले जाइने रे लाल, मार्या बेहुने कांध रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ ३ ॥ बे बालकने मारतां रे लाल, कांइ कही मुख

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वात रे ॥ ली० ॥ मनकेसरी मन अटकली रे लाल, लीधी अंगनी धात रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ ४ ॥ कहे मंत्री सुण मातजी रे लाल, हंसे कही एक वात रे ॥ ली० ॥ राणी वचन नवि मानीयां रे लाल, तो थावे छे घात रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ ५ ॥ राणी वचन जो मानता रे लाल, तो थावत सहु काज रे ॥ ली० ॥ तिणी वेला हुं पांतस्यो रे लाल, एम बोल्यो हंसराज रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ ६ ॥ जो मुखथी एम नाखीयुं रे लाल, कांइ विणाश्यो बाल रे ॥ ली० ॥ प्रछन्नपणे इहां राखती रे लाल, हवे मुज हुवो साल रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ ७ ॥ कांइ कुमति मुज उपनी रे लाल, धूणे राणी शीश रे ॥ ली० ॥ अणविमास्युं में कीयुं रे लाल, रूठो मुज जगदीश रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ ८ ॥ मनकेसरी मन चिंतवे रे लाल, राणी तणां ए काम रे ॥ ली० ॥ राजाने नंनेरीयो रे लाल, माम गमाइ गाम रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ ए ॥ वात सुणो हवे आगली रे लाल, सुणतां अचरिज थाय रे ॥ ली० ॥ रात दिवस वाटे वहे रे लाल, अति नय मन न खमाय रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ १० ॥ विषमा पर्वत वांकमा रे लाल, विषमी वहेंता वाट रे ॥ ली० ॥ नदीयां निज्झरणां नीहा-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लतां रे लाल, विषमा लंघे घाट रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ ११ ॥ विण विशामे चालता रे लाल, भूख तृषा सहे देह रे ॥ ली० ॥ शीत ताप सघलो सहे रे लाल, सुख दुःख नहीं को छेह रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ १२ ॥ बे भाइ रणमां फिरे रे लाल, मनुष्य मात्र नहीं कोय रे ॥ ली० ॥ किहां चढीया पाला पडे रे लाल, कर्म तणां फल जोय रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ १३ ॥ वनखंम तरुवर देखतां रे लाल, कायर ठांडे प्राण रे ॥ ली० ॥ एक एक मांहे मिल्या रे लाल, जिहां नवि दीसे भाण रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ १४ ॥ वाघ सिंह गुजे घणा रे लाल, मृगलां देतां फाल रे ॥ ली० ॥ सूअर सावर रोजडां रें लाल, देखे नाग विकराल रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ १५ ॥ एम अटवी लंघी घणी रे लाल, वातो करता जाय रे ॥ ली० ॥ हंस भणे वत्सराजने रे लाल, लागी तरष मुज भाय रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ १६ ॥ नगरथी आपण नीकल्या रे लाल, थाक्या जेवा आज रे ॥ ली० ॥ एहवा कदीय न थाकता रे लाल, बोले तव वछराज रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ १७ ॥ इण वम तलीये थें विशमो रे लाल, जोवुं पाणी ठाम रे ॥ ली० ॥ हमणां आणी पावशुं रे लाल, तो वछ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

महारुं नाम रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ १८ ॥ वरुला तले हंस विशम्यो रे लाल, लाधुं सुख शरीर रे ॥ ली० ॥ घोरो वड तले बांधीयो रे लाल, वछ गयो लेवा नीर रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ १९ ॥ ढाल हुइ उंगणीशमी रे लाल, कहे श्रीजिनोदय सूरि रे ॥ ली० ॥ वछराज जल कारणे रे लाल, जोतां पहोतो दूर रे ॥ ली० ॥ रो० ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ ३६० ॥

॥ दोहा ॥

॥ वछराज जल कारणे, चढीयो तरुवरमाल ॥ जलचर शब्द तिहां सुण्यो, दीठी सरोवर पाल ॥ १ ॥ चक्रवाक सारस घणां, पहुतो तिहांकणे वीर ॥ कमलफुल मांहे तीरे, दीठुं निर्मल नीर ॥ २ ॥ गरुड पंखी वासो वसे, मत्स कछनुं ठाम ॥ जोवानो अवसर नहीं, जलने आयो काम ॥ ३ ॥ ठाम विसार्यो ठागलो, जल लीयो पोयणपाम ॥ जल लेइ पाछो वल्यो, देखे सर्व आराम ॥ ४ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ भावनानी ॥

॥ ठकीडो न ठोडे रे गीरांदेरो ठेरुलो रे, हांरे मारी ठे रे मद पाइ ॥ ए देशी ॥

॥ वत्सराज जब नीसर्यो रे, नीसर्यो हो पाणी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लेवा काज ॥ वांसे सुखे हंस विश्राम्यो रे, हो वाट जोवे हंसराज ॥ १ ॥ पाणीडुं पाउं नाइ हुं तरस्यो थयो रे, हो कांइ जोवामो रे वाट ॥ पाणीमा विहुंणो रे नाइ हुं केम रहुं रे, क्षण मांहे थयो उच्चाट ॥ पा० ॥ कां० ॥ ॥ २ ॥ हवे वांसे जे कौतुक हुवो रे, हो वमनी टाढी ठांह ॥ नीचे बीठायो खमनो साथरो रे, हो देइ उंशीशे बांह ॥ पा० ॥ कां० ॥ ३ ॥ आवी निद्रा वली हंसने रे, हो बमो नीसरीयो साप ॥ हंस सूतो आव्यो तिहां रे, हो पोते प्रगट्युं पाप ॥ पा० ॥ कां० ॥ ४ ॥ ठाम ठाम हंसने मश्यो रे, हो बेठो हियडे आय ॥ पवन पीयो तिणे पापीए रे, हो मशणी रक्त ते खाय ॥ पा० ॥ कां० ॥ ५ ॥ मारग आयो वत्स उतावलो रे, हो नाइ केरे रे काज ॥ पाणी पाइने हुं सुख करुं रे, हो एम चिंते वज्रराज ॥ पा० ॥ कां० ॥ ६ ॥ सर्पे दीठो वज्रने आवतो रे, हो उतरीयो ततकाल ॥ वज्रराजे पण नयणे निरखीयो रे, हो दीठां पेठी जाल ॥ पा० ॥ कां० ॥ ७ ॥ नाग गयो निज स्थानके रे, हो पेठो वमने मूल ॥ हंसराज सूतो तिहां आवीयो रे, हो दीठो डंशनो शूल ॥ पा० ॥ कां० ॥ ८ ॥ नील वरण तनु निरखीयो रे, हो जोवण लाग्यो नाम ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चेतन देखी चित्तमां चिंतवे रे, हो बनमें उठी धाम ॥ पा० ॥ कां० ॥ ए ॥ पाणी परहुं नाखीयुं रे, हो लांबी मेली हाथ ॥ जाइ विना हुं केम रहुं रे, हो विश्व खावाने धाय ॥ पा० ॥ कां० ॥ १० ॥ जाइ तें कीधुं किस्युं रे, हो कीधो हुं निराधार ॥ सार करे तुं जाइ माहरी रे, हो दीधो कते खार ॥ पा० ॥ कां० ॥ ११ ॥ वार वार वज्र बेठो करे रे, हो नीचो धरणी जाय ॥ शक्ति गइ सहु शरीरनी रे, हो पाणी अन्न न खाय ॥ पा० ॥ कां० ॥ १२ ॥ वज्र कुमर झूरे घणुं रे, हो किहांइ न देखे श्वास ॥ गलहत्थो देइ हाथशुं रे, हो बेठो रोवे पास ॥ पा० ॥ कां० ॥ १३ ॥ जाइ तें कीधुं किस्युं रे, हो हुं बेठो वनवास ॥ मुजने दे तुं बोलमां रे, हो जिम मुज पूगे आश ॥ पा० ॥ कां० ॥ १४ ॥ मुजशुं प्रीति हती हंस ताहरी रे, हो सो हुइ केथी आज ॥ मुजहुंती अलगो थयो रे, हो विलपे इम वज्रराज ॥ पा० ॥ कां० ॥ १५ ॥ जननी गर्भे बेहु उपन्या रे, हो जन्म्या बेहु समकाल ॥ परदेशे बेहु आपे वध्या रे, हो बेहु जणीया रागमाल ॥ पा० ॥ कां० ॥ १६ ॥ माताए वली अपमाणीया रे, हो राजा कीधी रीस ॥ मनकेसरी आपणने मूकीया रे, हो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

छेदतां आपणुं शीश ॥ पा० ॥ कां० ॥ १७ ॥ आपण बेहु तिहांथी नीसर्या रे, हो आव्या इणे उद्यान ॥ पाणी लेवाने हुं गयो रे, हो तुं सूतो इण रान ॥ पा० ॥ कां० ॥ १८ ॥ जोवो नाइ माहरो दिन कारिमो रे, हो घालुं गलेमें फास ॥ राग हतो जो मुजथी ताहरो रे, हो इणविध करे विमास ॥ पा० ॥ कां० ॥ १९ ॥ हंस मुवो माता जाणशे रे, हो हैडे होशे दाह ॥ नयणे नीरप्रवाह वशे रे, हो सरली देशे धाह ॥ पा० ॥ कां० ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ ३९२ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥

॥ मायमी अनुमति दीयो मुज आज ॥ ए देशी ॥

॥ माता मनमें जाणती जी, मो सरखी नहीं नार ॥ पुत्र जण्या बे जोरुले जी, होशे मुज आधार रे ॥ बंधव ॥ १ ॥ तें कीधी निराश रे बंधव, हैये विमासी जोय ॥ ए आंकणी ॥ बे बालक महोटा होशे जी, जणशे शास्त्र अनेक ॥ नारी घणी परणावशुं जी, जिण मांहि घणो विवेक रे ॥ बंधव० ॥ २ ॥ बे बालक राजा होशे जी, देखीश बेहुनां सुख ॥ एहवी वात जो जाणशे जी, तो हैडे धरशे दुःख रे ॥ बंधव० ॥ ३ ॥ सेज सुंवाली पोढतो जी, के हींमोला खाट ॥ शुं तुं सूतो साथरे जी,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वहेता मारग वाट रे ॥ ४ ॥ बंधव० ॥ मनोवांछित सुख पामतो जी,करतो सरस आहार॥कर्मवशे रणमें पड्यो जी, अन्न न खाधो वार रे ॥ ५ ॥ बंधव० ॥ महेल जले तुं पोढतो जी, कर्मे वृक्षनी छांय ॥ उशीशां जिहां दीसतां जी, सो शिर नीचे बांह रे ॥ ६ ॥ बंधव० ॥ सेवक तुज सहु सेवता जी, सहुको करता आश ॥ एकलड़ो इहां विशम्यो जी, जोजो कर्मप्रकाश रे ॥ ७ ॥ बंधव० ॥ हुं मन मांहे जाणतो जी, बांधव छे मुज बांह ॥ मुजनें कोण गंजी शके जी, ए शीतल छे छांह रे ॥ ८ ॥ बंधव० ॥ एम मन दुःख कीधुं पूणुं जी, रोयां न आवे राज ॥ रण रोया जाणे नहीं जी, एम जंपे वछराज रे ॥ ए ॥ बंधव० ॥ एम मन पाछुं वालीयुं जी, साहस धरीयुं अंग ॥ एकलडो हुं इहांकणे जी, नहीं कोइ बीजो संग रे ॥ १० ॥ बंधव० ॥ साहस धरीने उठीयो जी, पहोतो सरोवर ठाम ॥ समुद्र तणी परे सारखुं जी, श्रवण सरोवर नाम रे ॥ ११ ॥ बंधव० ॥ रहे तिहां सारस पंखीयां जी, गरुड लहे विशराम ॥ जल आश्रय क्रीडा करे जी,वृक्षतरु तिहां अभिराम रे॥१२॥बंधव०॥ लघु बांधव कंधे करी जी, आव्यो वृक्षनी हेठ ॥ वृक्षनी शाखे बांधीयो जी,न पडे केहनी दृष्ट रे॥ १३ ॥बंधव० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सरोवर जल सिंची लीयो जी, शरीरे कीयो सनान ॥ फिट रे हैमा कारिमा जी, जीव्यो तुं कये ज्ञान रे ॥ १४ ॥ बंधव० ॥ एक तुरी हाथे ग्रह्यो जी, बीजे हुउं असवार ॥ तिहांथी आघो संचर्यो जी, सुणीयो वाजित्र धोकार रे ॥ १५ ॥ बंधव० ॥ तिण दिशि आघो संचर्यो जी, दीतुं नगरी स्थान ॥ कुंती नगरी परगमी जी, बार जोयणनुं मान रे ॥ १६ ॥ बंधव० ॥ लोक जणी तिहां पूछीयुं जी, नगरी नृपनुं नाम ॥ तुरी रतन इहां वेचीने जी, लेवुं चंदन इण ठाम रे ॥ १७ ॥ बंधव० ॥ ते चंदन हुं लेइने जी, देशुं बांधव दाग ॥ ढील हवे करवी नहीं जी, एम चिंते महाभाग रे ॥ १८ ॥ बंधव० ॥ वत्सराज कुंती गयो जी, वांसे पुण्य प्रकार ॥ गरुम पंखी तिहां आवीयो जी, हंस करेवा सार रे ॥ १९ ॥ बंधव० ॥ जिण काले हंस बांधीयो जी, तिणहीज बेठो ठाम ॥ गरलज नाखी उपरे जी, विषनुं न रह्युं नाम रे ॥ २० ॥ बंधव० ॥ हंसराज सचित हुवो जी, नयणे निरखे रत्न ॥ वडे किणे इहां बांधीयो जी, एम चिंते ते मन्न रे ॥ २१ ॥ बंधव० ॥ छोड्यां बंधन हाथशुं जी, दीतुं निर्मल नीर ॥ पाणी पीधुं प्रेमशुं जी, कीधुं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

स्नान शरीर रे ॥ २२ ॥ बंधव० ॥ बीजो खंम पूरो हुउं जी, कहे श्रीजिनोदय सूरि ॥ सुणतां गुणतां संपजे जी, नव निधि आणंदपूर रे ॥ २३ ॥ बंधव० ॥ इति हंसवछप्रबंधे हंसवछपरदेशगमनहंसदुःखसहननामा द्वितीयः खंडः संपूर्णः ॥ २ ॥ सर्व गाथा ॥ ४१६ ॥

॥ खंड त्रीजो ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे त्रीजो खंम बोलशुं, आणी मन आणंद ॥ सान्निध्य करजो सरसती, वली जयतिलक सूरींद ॥ १ ॥ विकथा निद्रा परिहरी, सुणजो बाल गोपाल ॥ सुणतां अचरिज उपजे, कांइ मत जंखो आल ॥ २ ॥ हंसराज जोवे तुरी, नवि देखे वछराज ॥ वन देखे बीहामणुं, सुणे सिंहनी गाज ॥ ३ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ ऊलालीयानी देशी ॥

॥ हंस तिहांथी उठीयो रे, जोवे तरुवर आम ॥ बंधव मोरा रे ॥ मुजने मूकी किहां गयो रे, ए उत्तमनुं नहीं काम ॥ बं० ॥ १ ॥ महारुं मनडुं बंधव किम रहे रे, तुज विरहो न खमाय ॥ बंधव० ॥ तुज विरहे हुं आकुलो रे, तुम विण किम दिन जाय ॥ बंधव० ॥ २ ॥ मन मांहे हुं जाणतो रे, नहीं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मूकुं तुज केम ॥ बं० ॥ जिण दिशि बंधव तुं गयो रे, तिण दिशि मुजने तेड ॥ बं० ॥ ३ ॥ सरवरनी पाले चढी रे, देतो सरला साद ॥ बं० ॥ वन तरुवर सहु ढुंढतो रे, पूछ्या न दीये साद ॥ बं० ॥ ४ ॥ नाइ नाइ करतो नमे रे, तरुने घाले बाथ ॥ बं० ॥ करतां तें कीधुं किस्युं रे, आज विछोड्यो साथ ॥ बं० ॥ ५ ॥ चिंतवीयो कांइ नवि हुउं रे, अणचिंतवीयो थाय ॥ बं० ॥ सरल निशासा मूकतो रे, सरली देतो घाइ ॥ बं० ॥ ६ ॥ के नाइ सावजे जरुयो रे, के लेइ गयो आकाश ॥ बं० ॥ बल बुद्धि तुज हुती घणी रे, क्यां थइ गइ ते नाश ॥ बं० ॥ ७ ॥ पग जोवे चिहुं दिशि फिरे रे, तरुतल दीठो साध ॥ बं० ॥ तप करी काया शोषवी रे, राने रहे निर्बाध ॥ बं० ॥ ८ ॥ त्रण प्रदक्षिणा देइने रे, वंदे मुनिना पाय ॥ बं० ॥ कहो मुज नाइ किहां गयो रे, तव जंपे मुनिराय ॥ बं० ॥ ए ॥ नाइ तुज कुंती गयो रे, चंदन लेवा काज ॥ बं० ॥ छए मासे मेलो हुशे रे, मलशे तिहां वज्रराज ॥ बं० ॥ १० ॥ मुनि वांदीने नीकल्यो रे, कुंती नगरे जाय ॥ बं० ॥ बार जोयण नगरी वमी रे, वर्णन न कह्युं जाय ॥ बं० ॥ ११ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जाइ कारण नगरी जमे रे, को न कहे तसु वात ॥ बं० ॥ कबाढो केल्हण मिल्यो रे, ठे परमाररी जात ॥ बं० ॥ १२ ॥ वात पूछी सवि गामनी रे, महारुं केल्हण नाम ॥ बं० ॥ पुत्र पंच ठे माहरे रे, एक एकथी अभिराम ॥ बं० ॥ १३ ॥ आवो घरे तुमे आपणे रे, थापीश तुमने पुत्त ॥ बं० ॥ वात मानी तिहां हंसजी रे, दीगो एवो सुत्त ॥ बं० ॥ १४ ॥ तेहने घरे रहेतां थका रे, इंधण आणे हाथ ॥ बं० ॥ ठए जाइ जोवे सदा रे, आवे जावे साथ ॥ बं० ॥ १५ ॥ हवे चरित्र वस्तु जाइनुं रे, पहोतो कुंती गाम ॥ बं० ॥ चंदन लेशुं चिंतवे रे, देइ बहुलां दाम ॥ बं० ॥ १६ ॥ गाम गाम ते पूछतो रे, दीगो मुम्मण हाट ॥ बं० ॥ मोटुं पेट मातो घणो रे, सेवे नरना थाठ ॥ बं० ॥ १७ ॥ वछराज मन चिंतवे रे, दीसे रुडे घाट ॥ बं० ॥ दीसे जेह सुंहालमा रे, तेहज पाडे वाट ॥ बं० ॥ १८ ॥ हाट जइ उभो रह्यो रे, दीगो मुम्मण शेठ ॥ बं० ॥ गादी दीधी आपणा हाथशुं रे, बेगो नीची दृष्टि ॥ बं० ॥ १९ ॥ शेठ कहे वछराजने रे, अश्वरत्न दोइ हाथ ॥ बं० ॥ अवर कोइ दीसे नहीं रे, एकाकी बीजो साथ ॥ बं० ॥ २० ॥ वलतो वचन कहे शेठने रे, अमे बांधव हुता दोय

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ बं० ॥ मुज नाइ सापे रुश्यो रे, जोर न चाल्युं कोय ॥ बं० ॥ २१ ॥ वरुतरु शाखे बांधीने रे, हुं आयो चंदन काज ॥ बं० ॥ लेइ चंदनने दाघशुं रे, लघु नाइ हंसराज ॥ बं० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ ४४१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रतन अमूलक मुज कन्हे, छे संख्या दश बार ॥ थापण राखो (ए) माहरी, अश्वरत्न दोइ सार ॥ १ ॥ शेठ सुणी मन हरखीयो, अश्व बंधाव्या बार ॥ रत्न लेइ आघां धर्यां, ये चंदन तत्काल ॥ २ ॥ बेउ नर जेतो उपडे, तोली लीयो वज्रराज ॥ मजूरने माथे दीयो, चाल्यो बंधव काज ॥ ३ ॥ श्रवण सरोवर आवीयो, आव्यो वनने ठाम ॥ नजर नरी नीहालीयो, कुंवर न देखे ताम ॥ ४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ इडर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ वरुतरु माले बांधीयो जी, में बंधव हंसराज ॥ कुंती नगरे हुं गयो जी, चंदन लेवा काज हो ॥ बांधव, बोलडो द्योने आज ॥ विलपे एम वज्रराज हो ॥ बांधव ॥ बो० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ वरु उपर चढी जोइयुं जी, किहांइ न देखे हंस ॥ वली नीचो ते उतर्यो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जी, जोवा लाग्यो वन्न हो ॥ बां० ॥ २ ॥ साव जनो जय नहीं इहां जी, कोणे ठोड्या आय ॥ मूऊं मरुं केम ऊतरे जी, पगे कहो केम जाय हो॥ बां० ॥ ३ ॥ तुजमें मति हुती घणी जी, अधिकुं जोर शरीर ॥ नदीय नर्मदा तिहांकणे जी, तें जीत्या बावन वीर हो ॥ बां० ॥ ४ ॥ किण दिशि हुं जोवा फरुं जी, कोणने पूछुं वाट ॥ ऊजम ऊजड जोवतो जी, लाधे बहुला घाट हो ॥ बां० ॥ ५ ॥ पग जोवंतो नीकल्यो जी, हुइ जीवणनी आश ॥ एकलडो हुं इहां-कणे जी, नहीं को बीजो पास हो ॥ बां० ॥ ६ ॥ आघो पग नवि नीसरे जी, होइ गयो आलमाल ॥ साद दीये सरला घणा जी, हैडे हुऊ साल हो ॥बां० ॥ ७ ॥ किहांइ सुध लागी नहीं जी, कोइ न सरीयुं काम ॥ पाठो कुंती आवीयो जी, जिहां मुम्मणनुं गाम हो ॥ बां० ॥ ८ ॥ शेठ जणी सहु जाखीयुं जी, जे हुइ अचरिज वात ॥ चंदन ल्यो थें आपणो जी, ठोडे आंसुप्रपात हो ॥ बां० ॥ ए ॥ बार रतन दीठां तुरी जी, ते केम दीधां जाय ॥ मग आघा पाछा जरे जी, न सुणे वातज कांय हो ॥ बां० ॥ १० ॥ बुद्धि फरी तिहां शेठनी जी, ए परदेशी बाल ॥ एहनो माल

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हुं लेइशुं जी, माथे देइ आल हो ॥ बां० ॥ ११ ॥ थापण-मोस धनकारणे जी, धन छे अनर्थ मूल ॥ अश्व रतन जब मागीयां जी, माथे उग्युं शूल हो ॥ बां० ॥ १२ ॥ धनकारण जूझे रणे जी, धनकारण सेवे खाट ॥ धन-कारण कूमां करे जी, धन पडावे वाट हो ॥ बां० ॥ १३ ॥ धनकारण कर्षण करे जी, धनकारण सेवे पाय ॥ धनकारण बंधव वढे जी, धन वहेंची सहु खाय हो ॥ बां० ॥ १४ ॥ मुम्मण शेठ चंदन लीयो जी, पण मन मांहे छे पाप ॥ अश्व लीयो थें आपणा जी, शेठ कहे एम आप हो ॥ बां० ॥ १५ ॥ रत्न पढी हुं आपशुं जी, रतन पड्यां छे गेह ॥ वछराज तिहां मूकीयो जी, वाम बांध्या छे जेह हो ॥ बां० ॥ १६ ॥ अश्व लीया बे आपणा जी, एके वाली टांग ॥ बीजो हाथे संग्रह्यो जी, शोध करे हवे सांग हो ॥ बां० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥ ४६२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शेठे कीधो कूकुडं, धाउं धाउं रे जाय ॥ अश्व लीया एणे माहरा, सहुको आया धाय ॥ १ ॥ तेहवे त्यां फिरतां थका, आव्या नगर तलार ॥ शेठे लइ देखामीयो, देवा लाग्या मार ॥ २ ॥ अश्व लइ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

शेठने दीया, शेठनी पूगी आश ॥ वछराज मन चिंतवे, जोजो कर्मप्रकाश ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ हवे धनसार विमासीयुं ॥ ए देशी ॥

॥ चोर तणी पेरे बांधीयो, उपर देतो मार ॥ घीसावीने ताडीयो, देखे बहु नर नार ॥ कर्म तणी गति वांकडी, छूटे नहीं कोइ ॥ नल राजा तिण सारिखा, रडवडीया सोइ ॥ १ ॥ क० ॥ जोजो राजा मुंजने, हुंता बहुला देश ॥ कर्मे भीख मंगावीयो, मूउं जे परदेश ॥ २ ॥ क० ॥ संभूम चक्री वली आठमो, मूउं समुद्र मझार ॥ षट् खंड रुद्धिनो धणी, गयो नरक मझार ॥ ३ ॥ क० ॥ करमे दशरथ काढीया, लखमण ने राम ॥ सीता साथे रडवडी, करम तणां ए काम ॥ ४ ॥ क० ॥ कोटवाल लेइ गयो, राजानी पास ॥ आगल लेइ उभो कीयो, स्वामी सुणो अरदास ॥ ५ ॥ क० ॥ शेठ कहे स्वामी माहरे, पेठो लेवा काज ॥ अश्वरत्न बे काढीयां, हमणां महाराज ॥ ६ ॥ क० ॥ वडा बुढाना पुण्यथी, में लाधो चोर ॥ अश्व थकी उतारीयो, में करीने शोर ॥ ७ ॥ क० ॥ वात राजाने विनवी, सहु जाणो फोक ॥ वात कहे सहु

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

केलवी, एहने नहीं शोक ॥ ८ ॥ क० ॥ जण जण सहु एहवुं चवे, राय इण नहीं को खोम ॥ महेर करो अम्ह उपरे, बंधणथी छोम ॥ ए ॥ क० ॥ शेठ कहे राजा सुणो, लोक न लहे ए वात ॥ जो तुम एहने छोमशो, तो करशे मुज घात ॥ १० ॥ क० ॥ के बूटो घर बालशे, देशे बहुलां दुःख ॥ इणने सही मार्या थका, हुं पामीश सुख ॥ ११ ॥ क० ॥ वज्रराज मन चिंतवे, शेठनो नहीं दोष ॥ आप कीयां फल पामीए, जीव म करे रोष ॥ १२ ॥ क० ॥ शेठ कहे राजा जणी, एह हण्या शी खाण ॥ निकर ठार मार्या थका, कंपे केइ काण ॥ १३ ॥ क० ॥ जो तुमे एहने छोमशो, सहुको करशे एम ॥ जो एहने नहीं मारशो, तो अन्न लेवा मुज नेम ॥ १४ ॥ क० ॥ राय कहे कोटवालने, शेठ राखो रूख ॥ एहने सही मार्या थका, शेठनुं जांजशे दुःख ॥ १५ ॥ क० ॥ कोटवाल लेइ नीक-ल्यो, हणवाने काज ॥ बूटे खर बेसारीयो, जोजो महाराज ॥ १६ ॥ क० ॥ मस्तक दीधुं ठीकरुं, मुख कीधुं श्याम ॥ वज्रराज मन चिंतवे, जोजो विधिनां काम ॥ १७ ॥ क० ॥ शेठ गयो निज स्थानके, मुज सरीयुं काज ॥ में उपाय कीधो जलो, मार्यो वज्र-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

राज ॥ १८ ॥ क० ॥ नगरलोक मल्यां घणां, जोवाने काज ॥ कोटवाल घरणी तिसे, दीठो वछराज ॥ १९ ॥ क० ॥ देखीने मन चिंतवे, इणनो नहीं दोष ॥ खुन खता इणमें हुवे, तो तातो पीवुं हुं कोश ॥ २० ॥ क० ॥ कोटवाल घर तेमीयो, जंपे घरनार ॥ पुरुष-रत्न किम मारीए, ए कोण आचार ॥ २१ ॥ क० ॥ बालहत्या महोटी कही, जाणी न करे कोय ॥ एम जाणी तुमे राखवो, पुण्य बहुलुं होय ॥ २२ ॥ क० ॥ ए बालक घरे राखशुं, थापशुं मुज पूत ॥ ए बालक राख्यां थका, रहेशे घरनुं सूत्र ॥ २३ ॥ क० ॥ सर्व गाथा ॥ ४७८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कोटवाल मान्युं वचन, हकरायां सहु लोक ॥ प्रछन्नपणे घर आणीयो, जाग्यो बेहुनो शोक ॥ १ ॥ पुत्र करीने थापीयो, को नवि जाणे वात ॥ शेठ थकी बीहीतां रहे, कीधो नरनो घात ॥ २ ॥ एम करतां दिन बहु थया, शेठने लोन अपार ॥ शुन दिन इहांथी पूरीयां, समुद्र वहाण अढार ॥ ३ ॥ वस्तु सहु लीधी घणी, मेल्यो बहुलो साथ ॥ पुष्फदंत माजी हुउं, लीधी बहुली आथ ॥ ४ ॥ शुन दिन प्रवहण पूरीयां,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चाले नहीं लगार ॥ मन चिंता मुम्मण हुइ, कीजे किस्यो प्रकार ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ वांगरीयानी देशी ॥

॥ मुम्मण तेड्यो ज्योतिषी रे, जोवो लगन विचार रे ॥ जोशीमा ॥ प्रवहण केम चाले नहीं रे, जोइ करो उपचार रे ॥ जो० ॥ १ ॥ किण देव दोषज कीयो रे, विचारो हैमा मांहि रे ॥ जो० ॥ हुं मानीश तारो बोलमो रे, देशुं बहुत पसाय रे ॥ जो० ॥ २ ॥ शेठ नणी कहे ज्योतिषी रे, राखी थापण गेह रे ॥ जो० ॥ तिणे पापे हाले नहीं रे, जाणो लगनमां नेह रे ॥ जो० ॥ ३ ॥ शेठ सुणी मन चमकीयो रे, साच कही सहु वात रे ॥ जो० ॥ शेठे वात सुणी तिसे रे, नरनो न हुउं घात रे ॥ जो० ॥ ४ ॥ कोटवाल घर राखीयो रे, थाप्यो आपण पुत्त रे ॥ जो० ॥ सुणी वात मन शंकीयो रे, कवण हुउं ए सुत रे ॥ जो० ॥ ५ ॥ दिन पांचे जातां थका रे, होशे मुजने साल रे ॥ जो० ॥ राजाने जाइ मलुं रे, नेट अमूलक आल रे ॥ जो० ॥ ६ ॥ आगे नेट मूकी करी रे, शेठे कीयो प्रणाम रे ॥ जो० ॥ राजा आदर आपीयो रे, आया कीये काम रे ॥ जो० ॥ ७ ॥ शेठ कहे स्वामी सुणो रे, हुं गेडुं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हवे वास रे ॥ जो० ॥ कोटवाल सबलो हुउं रे, वादे केहो वास रे ॥ जो० ॥ ८ ॥ राजा मरायो चोरटो रे, सो घर राख्यो आप रे ॥ जो० ॥ पुत्र करीने थापीयो रे, तिण आयो माय बाप रे ॥ जो० ॥ ए ॥ एक पुत्र मारे अठे रे, नामे ठे पुप्फदंत रे ॥ जो० ॥ समुद्र जणी ते चालशे रे, त्रीजा दिवसने अंत रे ॥ जो० ॥ १० ॥ कोटवाल सुत जे कीयो रे, सोय देवाडो राय रे ॥ जो० ॥ तेहने सेवक थापशुं रे, देश्शुं बहुलो पसाय रे ॥ जो० ॥११॥ तेहने करीशुं आजीविका रे, देशुं सहस्र दीनार रे ॥ जो० ॥ कोटवाल राय तेमीयो रे, राय कहे सुविचार रे ॥ जो० ॥ १२ ॥ शेठ जणी पुत्र आपवो रे, वचन हमारुं मान रे ॥ जो० ॥ कोटवाल मन चिंतवे रे, रीझवीयो राजान रे ॥ जो० ॥ १३ ॥ हसतां रोतां प्राहुणो रे, आगे दो तट पाठे वाघ रे ॥ जो० ॥ दिवस होवे जब पाधरो रे, दिन दिन वाधे आय रे ॥ जो० ॥ १४ ॥ शेठ जणी पुत्र सोंपीयो रे, आण्यो घर वहराज रे ॥ जो० ॥ मुम्मण शेठ मन चिंतवे रे, हवे मुज सरीयां काज रे ॥ जो० ॥ १५ ॥ प्रवहण पासे आणीयो रे, बेसाड्यो लेइ ठाम रे ॥ जो० ॥ पुत्र जणी एहवुं कहे रे, करजो पूरुं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

काम रे ॥ जो० ॥ १६ ॥ शीखामण दीधी घणी रे, आठ्यो मुम्मण तेह रे ॥ जो० ॥ प्रवहण पवने पूरीयुं रे, शुकन जलां ते लेह रे ॥ जो० ॥ १७ ॥ अश्व लीधा साथे घणा रे, लीधा सहस जूऊार रे ॥ जो० ॥ केता दिनने आंतरे रे, पाम्यो समुद्रनो पार रे ॥ जो० ॥ १० ॥ कनकावती जइ उतस्यो रे, जेट्यो पृथ्वीनाथ रे ॥ जो० ॥ राजा आदर आपीयो रे, दीठो बहुलो साथ रे ॥ जो० ॥ १ए ॥ तिण नगरे कोठी रह्या रे, मांड्यो बहु व्यवसाय रे ॥ जो० ॥ वछराज पांरूव थापीयो रे, नित नित पावण जाय रे ॥ जो० ॥ २० ॥ कांबलरूो वरू पहेरणे रे, लुखुं सूकुं खाय रे ॥ जो० ॥ अपलाणे घोडे चडे रे, पवन तणी परे जाय रे ॥ जो० ॥ २१ ॥ कनकच्रम राजा तणी रे, पुत्री गुण अजिराम रे ॥ जो० ॥ रति रंजा तिण सारिखी रे, चित्रलेखा जसु नाम रे ॥ जो० ॥ २२ ॥ कुंवर जणी तिण निरखीयुं रे, लक्षण अंग बत्रीश रे ॥ जो० ॥ अपलाणे घोडे चढे रे, दंरूायुध उत्रीश रे ॥ जो० ॥ २३ ॥ पुरुष तणी सघली कला रे, जाणे शास्त्र विचार रे ॥ जो० ॥ पूरां पुण्य पोते हुवे रे, तो थाये जरतार रे ॥ जो०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ २४ ॥ कुमरीए दासी मोकली रे, वज्र कुमरनी पास रे ॥ जो० ॥ नारी हुं तुं ताहरी रे, पूर हमारी आश रे ॥ जो० ॥ २५ ॥ तुजशुं कीधो नेहडो रे, जेम चूनीने हेम रे ॥ जो० ॥ जेम चकोर चित्त चंद्रमा रे, दीठां वाधे प्रेम रे ॥ जो० ॥ २६ ॥ के तुं मुजने आदरे रे, नहींतर ठांडुं प्राण रे ॥ जो० ॥ माहरे मन तुंहीज वसे रे, एहवी बोली वाण रे ॥ जो० ॥ २७ ॥ दासी वचनज मानीयुं रे, दासी हुइ उल्लास रे ॥ जो० ॥ मदनरेखा उतावली रे, आवी कुंवरी पास रे ॥ जो० ॥ २८ ॥ ढाल हुइ पचवीशमी रे, कुंवरी आणंदपूर रे ॥ जो० ॥ परणी जो पुण्य पूरुं हशे रे, कहे श्रीजिनोदय सूरि रे ॥ जो० ॥ २९ ॥ सर्व गाथा ॥ ५२२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मदनरेखा तव मूकीने, वात जणावी राय ॥ संवरमंरुप मांरीयो, कुमरी आनंद थाय ॥ १ ॥ राय वात मानी तिहां, तेड्या सघला भूप ॥ संवर-मंरुप आवीया, सुंदर सकल सरूप ॥ २ ॥ मल्या लोक मंडप घणा, बेठा ठामो ठाम ॥ पुष्फदंत वज्र-राजशुं, आवी बेठो ताम ॥ ३ ॥ चित्रलेखा कुमरी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तिसे, कीधा सोल शणगार ॥ दासी साथे लेइने, आवी तिहांकिणे नार ॥ ४ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ राग सोरठ ॥ काठबीयानी ॥ अथवा देखी कामनी दोय ॥ ए देशी ॥

॥ संवरामंडप मांहे, हे सखि संवरामंरुप मांहे ॥ गयगमणी निरखे सहु जी ॥ आरिसो लेइ हाथ, हे सखि आ० ॥ दासीय नाम कहे बहु जी ॥ १ ॥ वाजे गुहिर निशाण, हे सखि वा० ॥ नादे अंबर गाजीयां जी ॥ वाजे ताल कंसाल, हे सखि वाजे० ॥ महेल मंदिर सहु गाजीयां जी ॥ २ ॥ माला लेइ हाथ, हे सखि माला० ॥ राय राणा सहु निरखतां जी ॥ रिद्धि नगरी ने नाम ॥ हे० ॥ रि० ॥ गुण अवगुण सहु परखती जी ॥ ३ ॥ जे जे मूके राय ॥ हे० ॥ जे० ॥ ते ते विलखा थइ रहे जी ॥ जिम जिम आघी जाय ॥ हे० ॥ जिम० ॥ ते राजा मन उम्महे जी ॥ ४ ॥ पुप्फदंत पासे आय ॥ हे० ॥ पुप्फ० ॥ मन मांहे ते आणंदीयो जी ॥ कुमरी अनुपम देख ॥ हे० ॥ कु० ॥ पोते पुण्य पूरो कीयो जी ॥ ५ ॥ मुज वरशे सही एह ॥ हे० ॥ मुज० ॥ राजा सहु पूठे रह्यो जी ॥ निरख्यो निज भरतार ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हे० ॥ निर० ॥ बोलबंध जिणशुं कीया जी ॥ ६ ॥ घाली गलामें माल ॥ हे० ॥ घा० ॥ पुप्फदंत मन विलखो हुउं जी, विलखाणा सहु राय ॥ हे० ॥ वि० ॥ कनकभ्रम राजा जुउं जी ॥ ७ ॥ फिट्ट फिट्ट करे सहु लोक ॥ हे० ॥ फि० ॥ राजा सहु मूकी करी जी ॥ कुमरी मूरख एह ॥ हे० ॥ कुम० ॥ पामर गले माला धरी जी ॥ ८ ॥ धमधमीया सहु राय ॥ हे० ॥ धम० ॥ माला तुज ठाजे नहीं जी ॥ जो जीवणरी आश ॥ हे० ॥ जो० ॥ दे माला अमने सही जी ॥ ए ॥ बोले तव वज्रराज ॥ हे० ॥ बो० ॥ कोप करी कांइ कारिमो जी ॥ जेहने सरजी नार ॥ हे० ॥ जे० ॥ तेहने कर्म पोते समो जी ॥ १० ॥ सर्व गाथा ॥ ५३६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमरी कहे सहुको सुणो, कांइ करो विखवाद ॥ म्हारे मन ए मानीयो, फोकट करो ठो वाद ॥ १ ॥ मौन करी सहुको रह्या, प्राणे न हुवे प्रीति ॥ लोक सहु निंदे घणुं, जोजो कुंवरी रीति ॥ २ ॥ सहुको निज स्थानक गया, लहुमा महोटा नृप ॥ मुंह विलखाणुं सर्वनुं, कन्या देखी सरूप ॥ ३ ॥ निरांत हुइ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

राजा तणी, कुमरी थाप्यो कंत ॥ हथेवालो तिहां मेलव्यो, बेहुनी पहोंची खंत ॥ ४ ॥

॥ ढाल छठी ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ मोरी कुमरी रे, राजा दीतुं रूप ॥ कंबलडो वरु पहेरणे ॥ मो० ॥ मोरी कुमरी रे, तुं हुती अधिक सुजाण, कहो इम किम हुए तुम तणे ॥ मो० ॥ १ ॥ मो० ॥ तें दीतुं अधिक स्वरूप, तुं सतीनी परे सुंदरु ॥ मो० ॥ मो० ॥ किहां कल्पद्रुम रुख, किहां एरंड धत्तुरतरु ॥ मो० ॥ २ ॥ मो० ॥ किहां सूरज किहां चंद, किहां खजवानो चांदणो ॥ मो० ॥ मो० ॥ अरहट्ट वहे बारे मास, क्षण एक जलधर वरसणो ॥ मो० ॥ ३ ॥ मो० ॥ सहु राजाने ठांमी, इणने तें किम आदख्यो ॥ मो० ॥ मो० ॥ आप हाणि जग हांसी, एको काज न तें कख्यो ॥ मो० ॥ ४ ॥ मो० ॥ पासे बेठो शेठ, रूप कला गुण आगलो ॥ मो० ॥ मो० ॥ जे तें कीधो कंत, हाथे तेहने ठागलो ॥ मो० ॥ ५ ॥ मो० ॥ राजा पूछे शेठ, कोण नर छे एह ताहरो ॥ मो० ॥ मो० ॥ राजाजी कहुं साच, ए पांमव छे माहरो ॥ मो० ॥ ६ ॥ मो० ॥ राजा पूछे वात, वंश कहो तुम एहनो ॥ मो० ॥ मो० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

स्वामी न जाणुं वात, रूप रुडुं छे एहनुं ॥ मो० ॥ ७ ॥ मो० ॥ हुं राखुं बुं दूर, मन संदेह छे माहरे ॥ मो० ॥ मो० ॥ कीधो कुमरी कंत, शुं पूछा छे ताहरे ॥ मो० ॥ ८ ॥ मो० ॥ वात सुणी तव राय, है है कुमरी शुं कीयो ॥ मो० ॥ मो० ॥ आप विटाव्यो देह, आप जाण्यो आपे कीयो ॥ मो० ॥ ए ॥ मो० ॥ ए पुत्री नहीं मुज, कुलकलंकण कीधो सही ॥ मो० ॥ मो० ॥ एहनुं मुह म दीठ, आज पछी जोवुं नहीं ॥ मो० ॥ १० ॥ मो० ॥ तें पामी मुज माम, लोक मांहे हांसो कीयो ॥ मो० ॥ मो० ॥ ए अंतेउर मांहि, में तुजने उत्तर दीयो ॥ मो० ॥ ११ ॥ मो० ॥ तुं मुज मुझ समान, जीवंती केथी करुं ॥ मो० ॥ मो० ॥ लोक हुवे अपवाद, लोक थकी पण हुं डरुं ॥ मो० ॥ १२ ॥ मो० ॥ नगरथी बाहिर जाउ, छेहडे घर मांही रहे ॥ मो० ॥ मो० ॥ सांभली तातनी वात, कुमरी कंत भणी कहे ॥ मो० ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥ ५५३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुण स्वामी मुज विनति, मानो नरवर वात ॥
नहींतर रीसाणो थको, निश्चे करशे घात ॥ १ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वछराजे मान्युं वयण, बाहिर कीधो वास ॥ राजा रीसाणे थके, कोइ न आवे पास ॥ २ ॥ जननी छानो पूरवे, अन्न धन चीर कपूर ॥ चंद्रलेखाने पाठवे, नित्य उगमते सूर ॥ ३ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ राग कानडो ॥

॥ कामिनी तुं मूकने म्हारो हाथ ॥ ए देशी ॥

॥ वछराज मन चिंतवे रे, कीधुं में कुण काम ॥ में अबला नारी जणी रे, छंडावी एह ठाम रे ॥ १ ॥ कामिनी तुं मूकने म्हारो शोष ॥ ए आंकणी ॥ वछराज कहे कामिनी रे, इण वाते नहीं तुज दोष ॥ हुं पापी जूंडो थयो रे, मुजथी रायनो रोष रे ॥ २ ॥ का० ॥ नारी तें शुं जाणीयुं रे, मुज थाप्यो जरतार ॥ विधाता रूठी सही रे, के रूठो किरतार रे ॥ ३ ॥ का० ॥ मुजने को जाणे नहीं रे, इण नगरीनां लोक ॥ परदेशी हुं बापडो रे, तुजने मुजथी शोक रे ॥ ४ ॥ का० ॥ सुरतरु सम तें जाणीयो रे, दीठो अधिक स्वरूप ॥ जेद न जाण्यो मांहिलो रे, लागी तुजने चूंप रे ॥ ५ ॥ का० ॥ रतन चिंतामणि सारिखो रे, तें करी झाल्यो साच ॥ हुं मूरख छुं बापडो रे, नीवडशुं हुं काच रे ॥ ६ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

का० ॥ मात पिता तुज मानशे रे, मुजनो छोड्यां पास ॥ पर काजे दुःख कां सहे रे, जोली मनहीं विमास रे ॥ ७ ॥ का० ॥ हुं सेवक हुं शेठनो रे, पड्यो परवश हुं नार ॥ उण जाते हुं जाइशुं रे, आपां श्यो घरबार रे ॥ ८ ॥ का० ॥ किहां हंस किहां कागडो रे, संग मले कहो केम ॥ हुं जाते कोइ अहुं रे, केहवो मुजशुं प्रेम रे ॥ ए ॥ का० ॥ कुमर जणी कहे कामिनी रे, परखी कीधुं में काम ॥ मात पिता सहुको जलां रे, महारे तुमशुं काम रे ॥ १० ॥ का० ॥ सूर्य उगे पश्चिम दिशे रे, मही रसातल जाय ॥ समुद्र मर्यादा जो मिटे रे, मुजथी ए काम न थाय रे ॥ ११ ॥ का० ॥ जिहां जाशो तिहां आवशुं रे, जेम शरीरनी छांह ॥ इण वाते जो पांतरुं रे, तो मुज जीवन कांह रे ॥ १२ ॥ का० ॥ वछराज मन चिंतवे रे, एहनो पूरो राग ॥ एहवी नारी तो मिले रे, जो हुवे पोते भाग्य रे ॥ १३ ॥ का० ॥ एम सुखमां रहेतां थकां रे, राजा चिंते एम ॥ लोक मांहे निंदा हुवे रे, माख्यां थाये केम रे ॥ १४ ॥ का० ॥ कुमरीनी चिंता नहीं रे, कुमरी रहेशे रोय ॥ तेणी विधे हुं मारशुं रे, को नवि जाणे लोय रे ॥ १५ ॥ का० ॥ वछराज मारण जणी रे, राय करे परपंच ॥ चार पुरुष तेरमी कहे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे, जोइ सघला संच रे ॥ १६ ॥ का० ॥ वज्रराज जाउं घरे रे, मर्दन देजो रंग ॥ चार पुरुष थइ सामटा रे, करजो ढीलां अंग रे ॥१७॥ का० ॥ नस टालजो अंगनी रे, वेदनथी लहे काल ॥ ढील हवे करवी नहीं रे, त्रोडो मुजनुं साल रे ॥ १८ ॥ का० ॥ ते नर तिहांथी नीसऱ्या रे, रायने करी प्रणाम ॥ सेवक तारा तो सही रे, अवश्य करीए काम रे ॥ १९ ॥ का० ॥ मागी शीख सनेहशुं रे, आव्या वज्रनी पास ॥ राजाना आदेशथी रे, करशुं सेवा उल्लास रे ॥ २० ॥ का० ॥ विविध तेल तिहां काढीयां रे, कुमर न जाणे भेद ॥ कुमरी नयणे निरखीयुं रे, देखी धरीयो खेद रे ॥ २१ ॥ का० ॥ कंत जणी कहे कामिनी रे, चिहुंने ठे मन कूरु ॥ नस टालशे ए स्वामीनी रे, करशे सघलुं धूरु रे ॥ २२ ॥ का० ॥ वज्रराज कहे कामिनी रे, चिंता म करो कांय ॥ जेहवुं जे नर चिंतवे रे, तेहवुं तेहने थाय रे ॥ २३ ॥ का० ॥ बेहु पासे बे बे मळ्या रे, तेल लीयो सहु हाथ ॥ मर्दन देवा उठीया रे, कुमरे घाली बाथ रे ॥ २४ ॥ का० ॥ आधा पाछा रगदळ्या रे, नस काढी तत्काल ॥ बे नर धरती पाथऱ्या रे, बे नरे सांधी फाल रे ॥ २५ ॥ का० ॥ राजसभामें आवीया

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे, कांटा पमीया कंठ ॥ नासीने अमे आवीया रे, बे कीधा तिहां ठंठ रे ॥ २६ ॥ का०॥ सर्व गाथा ॥५७४॥

॥ दोहा ॥

॥ राजा मनमां चिंतवे, वात हुइ सहु फोक ॥
कामज कोइ नवि हुवो, मनमें धरतो शोक ॥ १ ॥
एक उपाय करशुं वली, तिणथी सरशे काज ॥
आहेमा मिष तेमशुं, साथे श्रीवछराज ॥ २ ॥
पुष्फदंतने राय दीयो, तेजी वमो तुखार ॥ नर देखीने उछले, को न हुवे असवार ॥ ३ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ मनोहरना गीतनी देशी ॥ अथवा तप सरिखुं जग को नहीं ॥ ए देशी ॥

॥ वाजी अणायो हो वालथी, मिले अति परचंम ॥ हो नरवर ॥ तेजी न खमे हो ताजणो, पामी करे शत खंम ॥ हो नरवर ॥ १ ॥ कुंवर तेमाव्यो हो तालमें, रमत रमवा काज ॥ हो न० ॥ ए आंकणी ॥ आदर दीधो हो अति घणो, बेठो राजा पास ॥ हो न० ॥ तीना तुरीय पलाणीया, दीधा राय उल्लास ॥ हो न० ॥ कुं० ॥ २ ॥ सहुको जन

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

साथे हुआ, कुमर लीयो निज साथ ॥ हो न० ॥ श्रेष्ठ तुरी राये आणीयो, मारण मांड्युं नाथ ॥ हो न० ॥ कुं० ॥ ३ ॥ अश्वरतन देखी करी, मन चिंते वछराज ॥ हो न०॥राजा हो मुजशुं कोपीयो,मारण मांड्यो साज॥हो न०॥ कुं० ॥४॥कुमर तणी आगे कीयो,कुमर हुवो असवार ॥हो न०॥वाजां हो विविधे वाजीयां, मूकण लागो कार ॥ हो न० ॥ कुं० ॥५॥ घोडो हो उंचो उछल्यो, हुवा सहुको हेरान ॥ हो न०॥सहुको जन एम उच्चरे, पडतां जाशे प्राण ॥ हो न० ॥ कुं० ॥ ६ ॥ सहुको जन अलगा रहो, निरखो अलगा लोक ॥ हो न० ॥ कुंवरी नयणे निरखती, धरती मनमें शोक ॥ हो न० ॥ कुं० ॥ ७ ॥ पवन तणी परे फेरीयो, लै चाल्यो आकाश ॥ हो न० ॥ कलशुं घोडो केलव्यो, आण्यो आपणी पास ॥ हो न० ॥ कुं० ॥ ८ ॥ राजा हो मुख विलखुं कीयुं, जे जे करुं हुं उपाय ॥ हो न० ॥ ए नर नहीं ए देवता, एम चिंते मन राय ॥ हो न० ॥ कुं० ॥ ए ॥ राजा हो मंदिर आवीयो, आव्यो घर वछराज ॥ हो न० ॥ कुंवरी मन आणंदीयुं, सिधां वांछित काज ॥ हो न० ॥ कुं० ॥ १० ॥ मंत्रीसर राये तेडीया, तेड्या बुद्धिनिधान ॥ हो न० ॥ चित्रलेखा पुत्री कन्हे,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मूके राय प्रधान ॥ हो न० ॥ कुं० ॥ ११ ॥ कुंवरी तें जुगतो कीयो, तुजथी न पड्यो वंक ॥ हो न० ॥ सुख भोगवो संसारनां, नाणो मनमें शंक ॥ हो न० ॥ कुं० ॥ १२ ॥ राय तणे आग्रहे करी, पूछे तुं भरतार ॥ हो न० ॥ नाम गाम कुल एहनुं, पूछे तुं सुविचार ॥ हो न० ॥ कुं० ॥ १३ ॥ राजा हो वचनज मानीयुं, सहुए दीधुं मान ॥ हो न० ॥ कंत भणी कहे कामिनी, वात सुणो राजान ॥ हो न० ॥ कुं० ॥ १४ ॥ कर जोमी कहे कामिनी, लोक करे सहु हास ॥ हो न० ॥ देव करी में मानीयो, ते केम हुवे उदास ॥ हो न० ॥ कुं० ॥ १५ ॥ महारे मन तुंहीज वसे, बूजो अवर न कोय ॥ हो न० ॥ वात प्रकाशो हो आपणी, जिम मुज आणंद होय ॥ हो न० ॥ कुं० ॥ १६ ॥ जाव-जीव हुं तो समी, जीवन मरणुं तो साथ ॥ हो न० ॥ प्राण दीसे छे हो ताहरा, साचुं मानो नाथ ॥ हो न० ॥ कुं० ॥ १७ ॥ मात पिताथी हुं विछमो, बाहिर मांड्यो वास ॥ हो न० ॥ एकण जीवने कारणे, स्वामी मनहीं विमास ॥ हो न० ॥ कुं० ॥ १८ ॥ अन्न पाणी तोही भखुं, जो करशो तुम वात ॥ हो न० ॥ भव बीजे हुं बोलशुं, नहींतर आतमघात ॥ हो न० ॥ कुं०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ए ॥ घरणी हठ मांड्यो घणो, रुहकी दीयो तब रोय ॥ हो न० ॥ हैडुं आहणे नाथशुं, जाग्यो पूरव मोह ॥ हो न० ॥ कुं० ॥ २० ॥ कुंवरी मन मांहे चिंतवे, में पूठी कांही वात ॥ हो न० ॥ अति ताण्यो त्रुटे सही, होशे मांहे घात ॥ हो न० ॥ कुं० ॥ २१ ॥ मौन करी कुंमरी रही, कंथ दीधो में ऽुःख ॥ हो न० ॥ कंता रुदन निवारीए, जिम होये तुज सुख ॥ हो न० ॥ कुं० ॥ २२ ॥ नारी राख हो रोवतो, कायर न हुवो कंत ॥ हो न० ॥ वात पूठी में पाठली, जो दीठो एकंत ॥ हो न० ॥ कुं० ॥ २३ ॥ वात पूठी तें माहरी, पूरवली सुण वात ॥ हो न० ॥ पुरपेठाणे हुं वसुं, नरवाहन मुज तात ॥ हो न० ॥ कुं० ॥२४॥ हंसावलि राणी तणा, जाया बे अनिराम ॥ हो न० ॥ जादव वंशे हो उपज्या, साथ्यां उत्तम काम ॥ हो न० ॥ कुं० ॥ २५ ॥ त्रीजो खंम पूरो हुउं, कुमरी आनंदपूर ॥ हो न० ॥ वात कही सहु पाठली, कहे श्रीजिनोदय सूरि ॥ हो न० ॥ कुं० ॥ २६ ॥ सर्व गाथा ॥ ६११ ॥ इति श्रीहंसराजवत्सराजप्रबंधे कुंतीनगरगमनकन्यापरिणयननामा तृतीयः खंमः संपूर्णः ॥ ३ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ खंम चोथो ॥

॥ दोहा ॥

॥ शुभ मति दीजे सरसती, माया करी मुज माय ॥ श्रीजयतिलक सूरींद गुरु, प्रणमुं तेहना पाय॥१॥चोथो खंड सुणजो चतुर, सुणतां अचरिज थाय ॥ चित्रलेखा नारी भणी, वात कहे समझाय ॥ २ ॥ मात पिताए माहरुं, नाम दीधुं वज्रराज॥लघु बंधवने आपीयुं, नाम ते श्री हंसराज ॥३॥ जन्मकालथी नीसऱ्या, बे वधीया परदेश ॥पन्नर वरष तिहांकणे रह्या, भेट्यो आवी नरेश ॥ ४ ॥ देशवटे बेहु नीकळ्या,राणी तणे सरूप॥ मन-केसरी अम राखीया, लोक न जाणे भूप ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ भले पधार्या तुमे साधुजी रे ॥ ए देशी ॥ ॥बे बांधव राणी नीकळ्या रे,पहोंच्या वडे उद्यान रे॥ वाट घाट भुंइ लंघता रे, वृक्ष तणां नहीं ज्ञान रे ॥ १ ॥ जुवो रे विचित्र गति कर्मनी रे, कर्म करे ते होय रे ॥ विधि लिखीयो ते नवि मिटे रे, एम कहे सहु कोय रे ॥ जुवो० ॥ २ ॥ लघु बंधव तरस्यो थयो रे, हुं लेवा गयो वारि रे ॥ पाणी लेइ पाछो वळ्यो रे, वांसे कर्म प्रकार रे ॥ जुवो० ॥ ३ ॥ हंस कुमर सापे डश्यो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे, मुज मन हुवो साल रे ॥ जाइ लेइने हुं वल्यो रे, बांध्यो वरनी माल रे ॥ जुवो० ॥ ४ ॥ कुंती नगरे हुं गयो रे, चंदन लेवा काज रे ॥ चंदन लेइ पाछो वल्यो रे, नवि देखुं हंसराज रे ॥ जु० ॥ ५ ॥ दैव-संयोगे उतर्यो रे, में दीठा बंधव पाय रे ॥ आलमाल आंगे हुआं रे, जीवे छे सही जाय रे ॥ जु० ॥ ६ ॥ हुं वली पाछो आवीयो रे, राखी आपण शेठ रे ॥ चोर करी मुज झालीयो रे, गले घाली मुज वेठ रे ॥ जु० ॥ ७ ॥ जिम तलारे राखीयो रे, पुष्पदंत लीधो साथ रे ॥ जिम हुं इहांकणे आवीयो रे, में परणी तुने हाथ रे ॥ जु० ॥ ८ ॥ पूर्व संबंध पूरो कह्यो रे, तेहवे आव्यो राय रे ॥ चित्रलेखा उठी उतावली रे, प्रणमे तातना पाय रे ॥ जु० ॥ ए ॥ नाम गाम कुमरी कह्यां रे, जाणी पूरव वात रे ॥ मनभ्रम जांगो रायनो रे, एह कुंवर विख्यात रे ॥ जु० ॥ १० ॥ राय कहे तव शेठने रे, आणो इहांकणे बांध रे ॥ लुंटी लीयो धन एहनुं रे, मारो एहने कांध रे ॥ जु० ॥ ११ ॥ कुंवर कहे राय सांभलो रे, महारे छे ए बंध रे ॥ सुख दुःख महारे इण समां रे, सो केम हणीए कंध रे ॥ जु० ॥ १२ ॥ यतः ॥ "गुण कीधे गुणही करे रे, ए छे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लोकाचार रे ॥ अवगुण कीधे गुण करे रे, उत्तम एह आचार रे ॥ १ ॥" राजा मन मांहि हरखीयो रे, हरख्यो सहु परिवार रे ॥ कुंवरी न पडे पांतरो रे, जोइ कीधो भरतार रे ॥ जु० ॥ १३ ॥ उत्सवशुं राय आणीयो रे, शणगार्‍यां सहु हाट रे ॥ नारी कंत साथे करी रे, जोवे नरना थाठ रे ॥ जु० ॥ १४ ॥ गोखे चढी जुवे गोरमी रे, दीसे देवकुमार रे ॥ परमेशर आपे घड्यो रे, एहवो नहीं संसार रे ॥ जु० ॥ १५ ॥ वज्रराज सुख भोगवे रे, सहुको माने आण रे ॥ हंसराज हैडे वसे रे, खटके साल समान रे ॥ जु० ॥ १६ ॥ किहां कुंती नगरी रही रे, किहां कनकावती एह रे ॥ समुद्र विचे आमो पड्यो रे, एम चिंतवे वज्र तेह रे ॥ जु० ॥ १७ ॥ कर्म मेले तिहां शुं थयुं रे, पुष्फदंत मलीयो राय रे ॥ शीख दीयो हवे स्वामीजी रे, आपण स्थानक जाय रे ॥ जु० ॥ १८ ॥ वज्रराज वाणी सुणी रे, हुवो साथो साथ रे ॥ बे कर जोमी विनवे रे, सुणजो पृथिवीनाथ रे ॥ जु० ॥ १९ ॥ दीजे शीख सनेहशुं रे, जेम जाउं महाराज रे ॥ कुंती नगरे जाइशुं रे, एम बोले वज्रराज रे ॥ जु० ॥ २० ॥ राय कहे सहु माहरुं रे, देशुं तुजने राज

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे ॥ सुख नोगवो देवता समां रे, जावानुं शुं काज रे ॥ जु० ॥ २१ ॥ तुम पसाये सहु माहरे रे, बहुली ठे मुज आथ रे ॥ हंस कुमर मलवा नणी रे, जाशुं पृथिवीनाथ रे ॥ जु० ॥ २२ ॥ ज्यां लगे नावुं त्यां लगे रे, पुत्री राखो स्वामी रे ॥ थोमा दिनमें आवशुं रे, सहीय करी हुं काम रे ॥ जु० ॥ २३ ॥ चित्रलेखा कहे कंतने रे, ए नहीं नारीनी रीत रे ॥ जिम पुरुषोनी ठांहमी रे, तेहवी तो मो प्रीत रे ॥ जु० ॥ २४ ॥ हठ लीधो नारीए घणो रे, तव ते मानी वात रे ॥ करो सज्जाइ चालशुं रे, जणाव्यो हवे तात रे ॥ जु० ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ ६४१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शुन्न दिन शुन्न वेला कुमर, पूठी नृप परिवार ॥ राजा दीधो दायजो, पहोंचाडे नर नारी ॥ १ ॥ राजा राणी बेहु जणां, शीख दीये ससनेह ॥ पुत्री आपण कंतने, मत तुं दाखे ठेह ॥ २ ॥ हली मली सहुको चल्यां, आव्यां आपण ठाम ॥ पुष्फदंत वछराज बे, चाल्या आपण गाम ॥ ३ ॥ समुद्र तणी पूजा करे, कुशल उतारो साम ॥ आखां पूगी मूकीने, विधिशुं करे प्रणाम ॥ ४ ॥ हंकार्यां प्रवहण सहु, वेगां

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कामिनी कंत ॥ शेठ नारी निरखी तिहां, लाग्यो खारे खंत ॥ ५ ॥ पुष्फदंत वछराजशुं, मांमी बहुली प्रीत ॥ कुमरीए मन जाणीयुं, ए नहीं रुमी रीत ॥ ६ ॥ पुष्फदंत मन चिंतवे, मेलवी नारी एह ॥ परदेशी बे एकलो, एहने दाखुं बेह ॥ ७ ॥ नारी लेवा कारणे, मांड्यो तेणे प्रपंच ॥ पाणी मांहे परठवुं, जोइ सघलो संच ॥ ८ ॥ माजी सहु हाथे कीया, सहु मनावी वात ॥ पंच दिवस पूरा हुवा, वहेतां दिन ने रात ॥ ए ॥ बठे दिनने अंतरे, प्रहर गइ जब रात ॥ वछराज आवो इहां, मत्स्य अपूरव जात ॥ १० ॥ वछराज पहोतो तिहां, दीठो नहीं लगार ॥ वांसेथी धक्कावीयो, पाड्यो समुद्र मझार ॥ ११ ॥ वछराज पमतां थका, गणीयो तिहां नवकार ॥ अशरण शरण ए माहरे, मंत्र तणो जे सार ॥ १२ ॥ मंत्र प्रजावे तिहां पड्यो, मगरमत्स्यनी पूठ ॥ वछराज पुण्ये करी, चाल्यो तिहांथी उठ ॥ १३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ हरिया मन लागो, रंग लागो थारी चाल ॥ ए देशी ॥

॥ पमतां पाणी वाजीयुं रे, चित्तमें चमकी नारी रे ॥ कंत कीधुं किस्युं ॥ जोवा लागी सुंदरी रे, नवि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

देखे नरतार रे ॥ कं० ॥ १ ॥ आसपास सहु जोइयो रे, किहां न देखे कंत रे ॥ कं० ॥ लोक सहु देखी करी रे, मन मांहे पमी भ्रांत रे ॥ कं० ॥ २ ॥ रोवंती रोवामीयां रे, प्रवहणवालां लोक रे ॥ कं० ॥ एकलडी हुं हुइ हवे रे, धरवा लागी शोक रे ॥ कं० ॥ ३ ॥ सार करो कंत माहरी रे,कीधो कांही वियोग रे ॥ कं० ॥ मुज मन तुंहीज वालहो रे, धरती मन मांहे शोक रे ॥ कं० ॥ ४ ॥ न्हानपणे मूइ नहीं रे, पेट धरी कांय माय रे ॥ कं० ॥ कंता तुं विण एकली रे, कहो केम दहाडा जाय रे ॥ कं० ॥ ५ ॥ तुज पसाये सुख घणां रे, में नोगवीयां स्वामी रे ॥ कं० ॥ तुंकारो तें नवि दीयो रे, बलिहारी तोरे नाम रे ॥ कं० ॥ ६ ॥ हैमा तुं फूटे नहीं रे, मूके मुख निःश्वास रे ॥ कं० ॥ तो विण जीव्यो कारिमो रे, कंत तणी शी आश रे ॥ कं० ॥ ७ ॥ साथे चूकी मरगली रे, जोवे दह दिशि साथ रे ॥ कं० ॥ बीजा जन देखे सहु रे, एक न देखे नाथ रे ॥ कं० ॥ ८ ॥ तुज पहेली मूइ नहीं रे, करती विरह विलाप रे ॥ कं० ॥ आप कमाइ नोगवुं रे, पूरव कीधां पाप रे ॥ कं० ॥ ९ ॥ पूरव नव में पापिणी रे, शोक्यने दीधो शाप रे ॥ कं० ॥ पुत्र तणुं सुख नवि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लह्युं रे, अथवा जपीया जाप रे ॥ कं० ॥ १० ॥ के पराइ थापण रही रे, के में दीधुं आल रे ॥ कं० ॥ के पाणीने कारणे रे, सरोवर फोमी पाल रे ॥ कं० ॥ ११ ॥ के में रमत कारणे रे, तरुनी मोमी माल रे ॥ कं० ॥ गर्न्न गलाव्या पापिणी रे, उंषध वेषध आल रे ॥ कं० ॥ १२ ॥ के काचां फल त्रोमीयां रे, रसना केरे स्वाद रे ॥ कं० ॥ अणगल पाणी वावर्यां रे, मनमां आणी प्रमाद रे ॥ कं० ॥ १३ ॥ के में माला खेंचीया रे, इमां नाख्यां हाथ रे ॥ कं० ॥ के में परनां धन हर्यां रे, मार्या बहुला साथ रे ॥ कं० ॥ १४ ॥ पंखी घाल्यां पांजरे रे, के घाल्यां मृग पास रे ॥ कं० ॥ मंदमति में पापिणीए रे, के में बलाव्यां घास रे ॥ कं० ॥ १५ ॥ तिल सरशव पीलावीया रे, लाज तणे में हेत रे ॥ कं० ॥ के में सूम करावीयां रे, के में खेमाव्यां खेत रे ॥ कं० ॥ १६ ॥ के पूरव नव पापिणी रे, मारी जू ने लीख रे ॥ कं० ॥ के में दान देतां थका रे, दीधी जूंमी शीख रे ॥ कं० ॥ १७ ॥ के में मोड्या करमका रे, सो केम होवे सुख रे ॥ कं० ॥ मंत्रे गर्न्न बंधावीया रे, शोक्यने दीधुं दुःख रे ॥ कं० ॥ १८ ॥ क्रण राख्युं में पारकुं रे, घाली पेटे जाल रे ॥ कं० ॥ के में परनां धन हर्यां रे,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मात विछोड्यां बाल रे ॥ कं० ॥ १९ ॥ के मछरभावे सही रे, मार्या विष दइ हाथ रे ॥ कं० ॥ के में लोभ- वशे करी रे, लूंट्या बहुला साथ रे ॥ कं० ॥ २० ॥ के केहनां घर भांगीयां रे, बालपणे में आल रे ॥ कं० ॥ होजो अंधां पांगलां रे, दीधी एहवी गाल रे ॥ कं० ॥ २१ ॥ निंदा कीधी साधुनी रे, आहार दीयो अंत- राय रे ॥ कं० ॥ पाप विचारे आपणां रे, केतांइक कहेवाय रे ॥ कं० ॥ २२ ॥ वार वार झूरे घणुं रे, नाखे आंसुपात रे ॥ कं० ॥ इण जीव्या मरवुं भलुं रे, करशुं आतमघात रे ॥ कं० ॥ २३ ॥ चित्रलेखा कहे स्वामिनी रे, जीवंतां सहु होय रे ॥ कं० ॥ भानु- मती ने सरस्वती रे, बेहु मल्यां सहु जोय रे ॥ कं० ॥ २४ ॥ धीरपणुं धरीए हइये रे, रुहक न दीजे रोय रे ॥ कं० ॥ शील भली पेरे पालतां रे, आपद् दूरे होय रे ॥ कं० ॥ २५ ॥ शील थकी सुख कोणे लह्यां रे, ते सुणजो दृष्टांत रे ॥ कं० ॥ राम घरणी सीता सती रे, आवी मिल्यां बे अंत रे ॥ कं० ॥ २६ ॥ मूकी अबला एकली रे, सिंहल द्वीपे नारी रे ॥ कं० ॥ पग उंलांस्या नारीना रे, पद्मावती भरतार रे ॥ कं० ॥ २७ ॥ नल राजा नारी तजी रे, मूकी दंरू-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कार रे ॥ कं० ॥ बार वरषे मेलो हुवो रे, पुण्य तणे परकार रे ॥ कं० ॥ २७ ॥ शंख राजा तेडावीया रे, कलावती कर दोय रे ॥ कं० ॥ जीवंतां मेलो हुवो रे, (ते तो) पुण्य तणां फल जोय रे ॥ कं० ॥ २९ ॥ जीव दृढ मन कर आपणुं रे, रोयां न लाजे राज रे ॥ कं० ॥ जीवंतां मेलो होशे रे, निश्चेशुं वत्स-राज रे ॥ कं० ॥ ३० ॥ सर्व गाथा ॥ ६७४ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ राग गोडी ॥ वणजाराना गीतनी देशी ॥

॥ मोरा जीवन हो तो विण रह्यो रे न जाय, एकलडो हुं केम रहुं ॥ मोरा प्रीतम हो ॥ मोरा जीवन हो एहवो जग नहीं कोइ, मननी हो वात किणने कहुं ॥ मो० ॥ १ ॥ मो० ॥ समुद्र जणी दे शीख, शरणे राखो स्वामीने जले ॥ मो० ॥ मो० ॥ मरण शरण मुज तोय, ऊंपावे कंत नवि मिले ॥ मो० ॥ २ ॥ मो० ॥ म पड म पड तुं नार, रत्नाकर एहवुं कहे ॥ मो० ॥ मो० ॥ वत्सराज तुज कंत, मत्स पूठे बेठो वहे ॥ मो० ॥ ३ ॥ मो० ॥ तुजथी पहेलो कंत, कुंती नगरे जायशे ॥ मो० ॥ मो० ॥ तिहां मलशे जरतार, आगे आणंद थायशे ॥ मो० ॥ ४ ॥ मो० ॥ अंबर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

एहवी वाणी, सुणीने मन हरखित हुइ ॥ मो० ॥ मो० ॥ हवे हुइ जीवन आश, मरण थकी सुसती थइ ॥ मो० ॥ ५ ॥ मो० ॥ ज्यां लगे मल्ले मुज कंत, शरीर सनान करुं नहीं ॥ मो० ॥ मो० ॥ लेशुं निरस आहार, चीर नवुं पहेरुं नहीं ॥ मो० ॥ ६ ॥ मो० ॥ तेहवे आयो शेठ, मन दृढ कर तुं कामिनी ॥ मो० ॥ मो० ॥ में नवि जाणी वात, जल बूरो वह्न जामिनी ॥ मो० ॥ ७ ॥ मो० ॥ शेठ जणे सुण नारी, छही रात्रे लख्यो इस्यो ॥ मो० ॥ मो० ॥ ते किण टाल्यो जाय, कहो अपशोष कीजे किस्यो ॥ मो० ॥ (नावे सही वह्नराज, मूवाशुं दुःख कीजे किस्यो) ॥ मो० ॥ ८ ॥मो०॥ हुं बुं तहारो दास, जे जोइए ते पूरशुं ॥ मो० ॥ मो० ॥ ज्यां जीवे त्यां सीम, माथे कीधे राखशुं ॥ मो० ॥ए॥ मो० ॥ मोशुं धर तुं राग, मो सरखो सही नहीं मिले ॥ मो० ॥ मो० ॥ जिणे नाख्या मुज कंत, तिणशुं मन कहो किम मले ॥ मो० ॥ १० ॥ मो० ॥ तव तेणे जाणी वात, इण पापीए पति माहरो ॥ मो० ॥ मो० ॥ नाख्यो समुद्र मझार, हिवे कंत थाये माहरो ॥ मो० ॥ ११ ॥ मो०॥नारी चिंते एम, शीयल किण विध राखशुं ॥मो०॥ मो० ॥ ताण्या जाशे छेह, मधुर वचन हुं नाखशुं ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मो० ॥ १२ ॥ मो० ॥ महारो तोशुं राग, कंत छतां पहेलो हुतो ॥ मो० ॥ मो० ॥ माग्या ढलीया आज, महारे तोशुं छे मतो ॥ मो० ॥ १३ ॥ मो० ॥ वात अछे इहां एक, तुरत कंत कीजे नहीं ॥ मो० ॥ मो० ॥ जो कीजे ए काम, प्रेत थइ पीडे सही ॥ मो० ॥ १४ ॥ मो० ॥ पमखो मास छ मास, जिम कहेशो तेम कीजीए ॥ मो० ॥ मो० ॥ जिहां छे थारो वास, मुहूर्त्त तिहांकणे लीजीए ॥ मो० ॥ १५ ॥ मो० ॥ शेठे मानी वात, धीरपणुं मनमें धर्युं ॥ मो० ॥ मो० ॥ धवलुं एटलुं दूध, हवे कारज महारुं सर्युं ॥ मो० ॥ १६ ॥ मो० ॥ पुण्फदंते धर्यो उल्लास, नगर कदी जाशुं वही ॥ मो० ॥ मो० ॥ कहे श्रीजिनोदय सूरि, हवे वछ-राजनी कहुं सही ॥ मो० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥ ७०१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पाणी मांहे पमतां थका, नव पद धरीयुं ध्यान ॥ नवकारे कीधुं किस्युं, दीधुं जीवितदान ॥ १ ॥ मछ पूठे जाइ पड्यो, बेठो जिम असवार ॥ तिणविध देवे प्रेरीयो, लंघे जलनिधि पार ॥ २ ॥ सात दिवस लगे सामटो, वछ तरीयो जल मांहि ॥ कुंती नगरी मूकीयो, बेठो तरुनी छांहि ॥ ३ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल चोथी ॥

॥ राग सिंधुरो ॥ हाथीया रे हलके वेआवे महारे प्राहुणो रे ॥ अथवा ॥कर्म परीक्षा करण कुमर चल्यो रे ॥ ए देशी ॥ उदक लेइने अंग पखालीयुं रे,पीधुं निर्मल वार ॥ वात विचारे बेठो पाउली रे, कोण करशे मारी सार ॥ १ ॥ चित्रलेखानी चिंता अति घणी रे, कोइ नहीं छे पास॥ एकलडी ते अबला किम रहे रे, होशे सहीय निराश॥ चित्रलेखा० ॥ २ ॥ मारे कारण नारी झूरशे रे, रहेशे सहीय उदास ॥ नारी विहुणुं जीव्युं कारिमुं रे, वछ मूके निःश्वास ॥ चि० ॥ ३ ॥ महारुं दूषण नारी कोइ नहीं रे, अचरिज ए हुइ वात ॥ आगें विछोहां नारी कंते हुआ रे, नाखे आंसुपात ॥ चि० ॥ ४ ॥ रणलो रोयो को जाणे नहीं रे, होशे जे होवणहार ॥ दुःखडे कीधुं कांही नवि पामीए रे, हैडे कीधो विचार ॥ चि० ॥ ५ ॥ सात दिवसनी निद्रा सामटी रे, सुतो बाग मझार॥ पुण्य प्रभावे सहु तरुवर फल्यां रे, जाइ जुई सहकार ॥ चि० ॥ ६ ॥ लोक देखीने अचरिज उपन्यो रे, मालण पासे जाय ॥ दैवसंयोगे वाडी नवपल्लव थइ रे, सलखु सांजली धाय ॥ चि० ॥ ७ ॥ बाग फरीने जोवे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चिहुं दिशे रे, जिहां सुतो वल्लराज ॥ आवी निरख्यो नारी तेहने रे, रूपे जिस्यो देवराज ॥ चि० ॥ ८ ॥ पग पद्म देखी मालण चिंतवे रे, पुरुष नहीं सामान्य ॥ एहने पुण्ये ए वन पल्लव्युं रे, एहने देशुं मान ॥ ॥ चि० ॥ ए ॥ मालण बेठी आवी ढूकडी रे, उंलासे तसु पाय ॥ जोर करीने कुंवर जगावीयो रे, उलट अंग न माय ॥ चि० ॥ १० ॥ आलस मोडी कुंवरजी उठीया रे, कुमर करे रे जूहार ॥ देइ आशीषने सलखु एम कहे रे, तुं आयो पुण्य प्रकार ॥ चि० ॥ ११ ॥ फल फूल लेइ कुमर आगे धर्या रे, पूछे पूरव वात ॥ एकाकी तुं कुमर दीसे जलो रे, नहीं कोइ तुज संघात ॥ चि० ॥ १२ ॥ करमप्रसादे माता हुं एकलो रे, माय अहुं निर्धार ॥ मननी वात कहुं माय केहने रे, एक अहे किरतार ॥ चि० ॥ १३ ॥ हुं परदेशे जावा नीकळ्यो रे, आव्यो इणे आराम ॥ तुज देखीने महारुं दुःख टळ्युं रे, सिधां वांछित काम ॥ चि० ॥ १४ ॥ दुःखीयां दीगां दुःखडुं सांजरे रे, मालण मूके धाह ॥ सरल निशासा सलखु मूकती रे, कुमरे राखी साह ॥ चि० ॥ १५ ॥ दुःखनी वात कहो मुज मातजी रे, जिम हुं जाणुं वात ॥ मालण जंपे लोचन जल जरी रे, हुं हुं इहां विख्यात

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ चि० ॥ १६ ॥ पांच पुत्र हता वछ माहरे रे, वली वल्यो नरतार ॥ कर्मसंयोगे वछ सहु ए मूआ रे, नहीं जल पावणहार ॥ चि० ॥ १७ ॥ करजोमीने कुमर नणी कहे रे, महारे बहुली आथ ॥ पुत्र करीने थापुं तुजने रे, आवो महारी साथ ॥ चि० ॥ १७ ॥ पर-उपकारी वात मानी तिहां रे, थाप्यो सलखु पुत ॥ घरनो नार दीयो सहु तेहने रे, घर आण्यो निज सुत ॥ चि० ॥ १ए ॥ विविध प्रकारे गुंथे बेरखा रे, गुंथे नव-सर हार ॥ फूलदमा गुंथे बहु नातिना रे, एम करे व्यापार ॥ चि० ॥ २० ॥ काम करंतां नारी न विसरे रे, बीजुं नावे चित्त ॥ वन जइने वछराज आरडे रे, पूर-वली तिण प्रीत ॥ चि० ॥ २१ ॥ सोहिला दहामा दुःखमां निर्गम्या रे, दिवस न लागे नूख ॥ राते सुतो वछराज वलवले रें, नारी केरे दुःख ॥ चि० ॥ २२ ॥ हवे वछराज सुखे रहेतां थका रे, मन कीधुं एकांत ॥ श्रीजिनोदय कहे नारी तणुं रे, सुणजो सहु वृत्तांत ॥ चि० ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ ७२७ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ नाहलीया म जाजो गोरी रावट वटे रे ॥ ए देशी ॥

॥ प्रवहण पवने प्रेरीयो रे, वाला चाले दिन ने

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रात ॥ सती शीले सुखे वहे रे, हवे नारीनी सुणजो वात ॥ १ ॥ वालमीआ तुं जाये कुंती नगरी पाधरो रे, जिहां छे शेठनुं गेह ॥ तिहांकणे गयाथी कंता तुं मिले रे, जिम सुख उपजे देह ॥ वालमीआ० ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ प्रवहण समुद्रेथी उतर्या रे, वली उतरीयां लोक ॥ नगरी निरखी नयणशुं रे, न्हांग्यो सविहु शोक ॥ वा० ॥ ३ ॥ नगरी बाहिर डेरा कीया रे, उतार्या सहु न्हार ॥ पुष्फदंत मन मांहि चिंतवे रे, हिवे करशुं एहने नार ॥ वा० ॥ ४ ॥ वधावो आगे मूकीयो रे, मुम्मण हुउं उन्हाह ॥ सहुको जन आइ न्हेटीया रे, उलट अंग न माय ॥ वा० ॥ ५ ॥ लोक वाणी सहुको कहे रे, शेठे परणी नारी ॥ राजकुमरी इण सारखी रे, को नहीं छे संसार ॥ वा० ॥ ६ ॥ चित्रलेखा आणी घरे रे, कीधा बहुला जंग ॥ हवे गृहिणी हुइ माहरी रे, नारी राखो मोशुं रंग ॥ वा० ॥ ७ ॥ शेठ तमे सुसता रहो रे, सुसते सीझे काज ॥ गारीने पीजे सही रे, उतावलां न लाभे राज ॥ वा० ॥ ८ ॥ माहण वात सुणी सहु रे, आवी कुंवरनी पास ॥ पुष्फदंत शेठ इहां आवीया रे, सघलो कीयो प्रकाश ॥ वा० ॥ ९ ॥ वात सुणी मन हरखीयो रे, पूगी मननी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

आश ॥ नारी मुजने सही मिले रे, हवे जांग्यो मन उदास ॥ वा० ॥ १० ॥ कुमर कहे माता सुणो रे, तुमने बे पग फेर ॥ नित्य आपुं कुसुम हुं तुम जणी रे, आगे करो हजूर ॥ वा० ॥ ११ ॥ वत्सराजे कीधुं किस्युं रे, आगे चतुर सुजाण ॥ चित्रलेखाने कारणे रे, कीधो देह प्रमाण ॥ वा० ॥ १२ ॥ कंठ जणी कीधो जलो रे, पहेरण नवसर हार ॥ बाजुबंध ने बहेरखा रे, चरणा कंचू सार ॥ वा० ॥ १३ ॥ पुष्प तणां सहु लूगमां रे, लखीयुं आपणुं नाम ॥ कुशल क्षेम लखीयां सहु रे, नारी आव्यो बुं इण गाम ॥ वा० ॥ १४ ॥ छाबुं जरीयुं फूलनुं रे, नीचे घाली जेट ॥ मालण माथे लेइने रे, पहोती तिहांकणे शेठ ॥ वा० ॥ १५ ॥ शेठ जणी आगे धस्यो रे, देखी धर्यो उल्लास ॥ ले जाउं ए महेलमां रे, पहुंचो नारी पास ॥ वा० ॥ १६ ॥ मालण ते मांहे गइ रे, लागी कुमरी पाय ॥ जेट आणी में तुम जणी रे, दीठे आणंद थाय ॥ वा० ॥ १७ ॥ तें मुजने महोटी करी रे, माता नावे मुजने काम ॥ कंत पखे कीजे किस्युं रे, शुद्ध नहीं मुज स्वामी ॥ वा० ॥ १८ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पान फूल लेवो तेहनो रे, माता मुजने छे सही नीम ॥ वस्त्र नवुं पहेरुं नहीं रे, जिहां न मले तिहां सीम ॥ वा० ॥ १ए ॥ मालण फूल परहां कीयां रे, कंचू लीधो हाथ ॥ अलगो नयणे नीहालीयो रे, कीधो छे सही नाथ ॥ वा० ॥ २० ॥ दीतुं नाम कंतनुं रे, दीतुं आपण नाम ॥ दीगां मन आणंदीयुं रे, विधिशुं करे प्रणाम ॥ वा० ॥ २१ ॥ ढाल हुइ ए पंचमी रे, वांच्या आणंदपूर ॥ आगे वात सहु पूठशे रे, कहे श्रीजिनोदय सूरि ॥ वा० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ ७४ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिश्री कुंती थकी, लिखितं श्री वन्हराज ॥ कुशल क्षेम हुं आवीयो, दुःख म करे मो काज ॥ १ ॥ सलखु मालणने घरे, रहुं हुं सदा उदास ॥ परमेसर जाणे सही, केहवो करुं प्रकाश ॥ २ ॥ हम तुम जिहांथी विछड्यां, करवी निंद हराम ॥ अन्न पाणी निरतो नखुं, हवे जीव आयो ठाम ॥ ३ ॥ उखाणो नदी नावनो, आय मिल्यो इहां ठाम ॥ सहीयारो समुद्र लगे, तुम हम हवे प्रमाण ॥ ४ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल छठी ॥

॥ राग मल्हार ॥ उलंगमीनी देशी ॥

॥ कुमरी कुमरी अक्कर देखीने रे, जाग्यो मनमां मोह ॥ कुमरने कुमरने राख्यो साहेबे जीवतो रे, जांग्यो सहु अंदोह ॥ १ ॥ जीवतां जीवतां राजेसर सहु आवी मले रे, मूआं केहो सोस ॥ जायने जमारो आश विलुरूमो रे, कंत धस्यो मन रोष ॥ जीव० ॥ २ ॥ कंत कंत पखे हुं रही जीवती रे,ते तो सायर दोष॥ताहरो रे ताहरो कंतो तुज आवी मले रे, तिण में कीधो शोष ॥ जीव० ॥ ३ ॥ नाहले नाहले उलंजा लखीया कारिमा रे, मूल न जाणे वात ॥ तहारे तहारे कारणे हुं फूरती रहुं रे, सदा अहो ने रात ॥ जीव० ॥ ४ ॥ में तुज में तुज कारण कंता परिहस्या रे, रुमा सरस आहार ॥ तन भूषण तन भूषण कंता सहु तज्यां रे, सो जाणे किरतार ॥ जीव० ॥ ५ ॥ घोडो ते घोडो ते दोमीने मरे रे, सार न लहे असवार ॥ घोमाने घोमाने राजेसर दूषण को नहीं रे, बेसणहार गमार ॥ जीव० ॥ ६ ॥ तारे तारे कारण हुं दुःखणी हुइ रे, फूरी दिन ने रात ॥ आंसुडे आंसुडे सिंचीयुं वाला में हैयमुं रे, पण तें न जाणी वात ॥ जीव० ॥ ७ ॥ मरम मरम

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वचन प्रियनां वांचीने रे, मूर्छाणी तिहां नारी ॥ वली उठी वली उठी धरणी पडे रे, कंत न लाधी सार ॥ जीव०॥ए॥ मालणी मालणी मन विलखुं कीयुं रे, धुजण लागी तत्काल ॥ चित्रलेखा चित्रलेखाने कारणे रे, सहु मलीयां तत्काल ॥ जीव० ॥ ए ॥ सर्व गाथा ॥ ७६१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ए फोशी फायण अछे, लागी एहने पिंफ ॥ जो छोडे तो उगरे, कूंटो काढी रंफ ॥ १ ॥ लोक सहु भेलां हुआं, करे घणा संताप ॥ मालण मनमां चिंतवे, पूरव भवनां पाप ॥ २ ॥ एक कहे मालण थकी, न होवे एवुं काम ॥ भूत प्रेत लागो अछे, तिणनो छे ए विराम ॥ ३ ॥ राजकुमरी मालण भणी, पूछे सहु वृत्तांत ॥ कुसुम किणे ए गुंथीयां, भांगो मननी भ्रांति ॥ ४ ॥ साची वात सलखु कहे, जूठ म भाखें मात ॥ मालण कहे सुत माहरे, कीधां विविध भात ॥ ५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ देशी अलबेलानी ॥

॥ अनुमाने राणी जाणीयुं रे लाल, सही हुवे मुज कंत ॥ प्यारा राय बे ॥ सागर वचन साचुं हुवुं रे लाल, पूगी मुज मन खंत ॥ प्या० ॥ १ ॥ मनडुं ते मोह्युं माहरुं रे लाल ॥ तोशुं मोरी प्रीत ॥ प्या० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

म०॥ जिम गयवर रेवा नदी रे, जिम चकोर चित्त चंद ॥ प्या ०॥म०॥२॥लोक सहु पासे कीया रे लाल, मालण राखी पास॥प्या०॥ विनतमी एहवी लखी रे लाल, हुं हुं तोरी दास ॥ प्या० ॥ म० ॥ ३ ॥ रही न शकुं हुं तो विना रे लाल, पूगी न शकुं कोय ॥ प्या० ॥ महारे मन तुंहीज अछे रे लाल, तोही न जाणुं कोय ॥ प्या० ॥ म० ॥ ४ ॥ कंता तारे कारणे रे लाल, ठोमी शरीरनी सार ॥ प्या० ॥ लूखे मन हुं इहां रहुं रे लाल, लेती निरस आहार ॥ प्या० ॥ म० ॥ ५ ॥ महारे तो विण को नहीं रे लाल, बीजो इण संसार ॥ प्या० ॥ बीजा पुरुष बंधव समा रे लाल, इण नव तुं नरतार ॥ प्या० ॥ म० ॥ ६ ॥ शील नली पेरे पालतां रे लाल, आवी हुं इण गाम ॥ प्या० ॥ पान मांहि संदेशमो रे लाल, लखीयुं आपणुं नाम ॥ प्या० ॥ म० ॥ ७ ॥ बीडुं बांधी आपीयुं रे लाल, देजो पुत्रने हाथ ॥ प्या० ॥ दीधी मुद्रा हाथनी रे लाल, दीधी बहुली आथ ॥ प्या० ॥ म० ॥ ८ ॥ मालण आवी मलपती रे लाल, आवी आपण गेह ॥ प्या० ॥ बीडुं लइ आगे धर्युं रे लाल, कुमरीए दीधुं जेह ॥ प्या० ॥ म० ॥ ए ॥ पान वांच्युं लइ प्रेमशुं रे लाल, हरख्यो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हियरा मझार ॥ प्या० ॥ चित्रलेखा साची सती रे लाल, नहीं एहवी संसार ॥ प्या० ॥ म० ॥ १० ॥ हंस कुमर वछराजने रे लाल, जिणविध मलशे आय ॥ प्या० ॥ सो विधि कहीशुं इहांकणे रे लाल, सहु सुणजो चित्त लाय ॥ प्या० ॥ म० ॥ ११ ॥ कुंती नगरीथी नीकल्या रे लाल, समुद्रे श्रीवछराज ॥ प्या० ॥ कुंती नगरी तेहनो रे लाल, मृत्यु लह्यो नरराज ॥ प्या० ॥ म० ॥ १२ ॥ राजाने सुत को नहीं रे लाल, नगरी हुइ निर्नाथ ॥ सु० ॥ पंच शब्द मेला करी रे लाल, मलीया सहुको साथ ॥ प्या० ॥ म० ॥ १३ ॥ पूर्ण कलश लेइ हाथीयो रे लाल, ले फरीयो सहु गाम ॥ प्या० ॥ कवाडी केदहण घरे रे लाल, आयो तिहांकिण ठाम ॥ प्या० ॥ म० ॥ १४ ॥ कलश नमाव्यो हाथणी रे लाल, हंस हुउं तिहां राय ॥ प्या० ॥ वाजां तिहांकणे वाजीयां रे लाल, प्रणमे सहुको पाय ॥ प्या० ॥ म० ॥ १५ ॥ हंसराज राजा हुवो रे लाल, सहुको माने आण ॥ प्या० ॥ वछराज नवि विसरे रे लाल, हुतो जीवन प्राण ॥ प्या० ॥ म० ॥ १६ ॥ दिन दिन पमह वजावतो रे लाल, जे सुधि कहे वछराज ॥ प्या० ॥ एकण नगरी तेहनुं रे लाल,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

आपुं तेहने राज ॥ प्या० ॥ म० ॥ १७ ॥ सात दिवस वोल्या जिसे रे लाल, कुमरी सुणीयो ढोल ॥ प्या० ॥ राजाने जाइ कहो रे लाल, कहीशुं महारो बोल ॥ प्या० ॥ म० ॥ १८ ॥ मुजने मेलो पालखी रे लाल, जो तुमने छे चाह ॥ प्या० ॥ वछराज कहुं वातमी रे लाल, राजाने धरी उछाह ॥ प्या० ॥ म० ॥ १९ ॥ राजाने जइ विनव्यो रे लाल, राय धर्यो उल्लास ॥ प्या० ॥ ले जाउं तुम पालखी रे लाल, आणो महारी पास ॥ प्या० ॥ म० ॥ २० ॥ राजा मूकी पालखी रे लाल, आया घरनी बार ॥ प्या० ॥ पुष्फदंत मनमें हरखीयो रे लाल, में परणी सा नारी ॥ प्या० ॥ म० ॥ २१ ॥ किम मूकुं हुं एकली रे लाल, प्रसिद्ध करुं घरनारी ॥ प्या० ॥ सर्व महाजन मेलीने रे लाल, जाशुं लइ दरबार ॥ प्या० ॥ म० ॥ २२ ॥ मुम्मण शेठ परिवारशुं रे लाल, पुष्फदंत हुवो साथ ॥ प्या० ॥ पंच शब्द आगे वाजता रे लाल, हवे कुंवरी किण हाथ ॥ प्या० ॥ म० ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ ७९० ॥

॥ ढाल आठमी ॥ चोपाइनी देशी ॥

॥ सहु महाजननी साथे हुउं, मुम्मण शेठने लेइ भेटीयो ॥ फांद हलावे चावे पान, हाथे धरे अजि-

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मान ॥ १ ॥ हालो हालो सहुको कहे, पालखी पासे ऊना रहे ॥ चांचो चांगो ने चांपशी, गांगो सांगो ने धर्मशी ॥ २ ॥ पेथो पोपट ने पदमशी, साकर सुंदो ने करमशी ॥ तेजो राजो ने लखमशी, कचरो घेलो ने पोमशी ॥ ३ ॥ वरधो वासण ने वेरशी, जागो जेमल ने जेतशी ॥ नेतो खेतो ने खीमशी, नाद्रो नाद्रो ने नीमशी ॥ ४ ॥ राजो रामो ने राजशी, तालो तोलो ने तेजशी ॥ कीको वीको ने सोमशी, हरखो हीरो ने हेमशी ॥ ५ ॥ राणो रणमल ने रूपशी, कल्लो देलो ने कूपशी ॥ सूजो सामल ने समरशी, पासो आसो ने अमरशी ॥ ६ ॥ एहवा एहवा महोटा शेठ, सहुको बेठा वरूला हेठ ॥ मांहोमांहे हूंके हसे, राजाने जोशुं इण मिषे ॥ ७ ॥ पुष्फदंत घर जेवी नार, बीजी अवर नहीं संसार ॥ सहुको महाजन पोले गया, ठरूीदार जइ आगे कह्या ॥ ८ ॥ परस्त्री बंधव हंसराज, आमी प्रियठ बंधावे काज ॥ आसण बेसण ऊाऊां धर्यां, महाजन सहुको तिहां संचर्या ॥ ए ॥ सहु महाजन कीयो जूहार, प्रियठ मांहि बेठी ते नार ॥ यथायोग्ये बेठा सहु, लोक मल्या ठे सुणवा बहु ॥ १० ॥ राय कहे सुणजो सहु लोक,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जो बोलशो तो देशुं ठोक ॥ राय वचन एहवां जब कह्यां, मान करीने बेठा रह्या ॥ ११ ॥ कुंवरी बोली सुण राजान, एक चित्ते सुणजो दइ कान ॥ नगरी तुमारी पुरपेठाण, बावन वीर तणुं तिहां ठाण ॥ १२ ॥ यादव वंश करे त्यां राज, उत्तम तणां समरे काज ॥ शालिवाहन सुत प्रगट प्रताप, नरवाहन राजा तुम बाप ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥ ८०३ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ नीनइयानी देशी ॥

॥ तुम जननी हंसावलि रे, तसु जन्म्या बे अंग-जातो जी ॥ हंस कुमर वज्रराज बेहु हुवा, नाम दीयां माय तातो जी ॥ १ ॥ हंस नरेसर सुणजो तुम चरित्त, नानपणानी वातो जी ॥ पनर वरष विदेशे रह्या तुमे, जणीया दिन ने रातो जी ॥ हं० ॥ २ ॥ मात पिता भेटणने काजे, पहोता पुरपेठाणो जी ॥ मंत्रीए तिहां मारण मांमीया, हुकम कीयो राजानो जी ॥ हं० ॥ ३ ॥ प्रज्ञप्तपणे मनकेसरी राखीया, दीधुं जीवितदान जी ॥ अश्वरत्न बे मंत्री आपीयां, दीधां रत्न प्रधान जी ॥ हं० ॥ ४ ॥ तिहांथी तमे बेहु नीसर्या, पहुता अटवी गामो जी ॥ हंस कुमरने तिरषा उपनी, जलनुं नहीं तिहां नामो जी ॥ हं०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥५॥ वरु बंधव तुजने कारणे, पहोतो जलने काजो जी ॥ जल लेइने पाछो आवीयो, चपल गते वछराजो जी ॥ हं० ॥६ ॥ हंस कुमरने विषधर रूशीयो, जिम बांध्यो तरुमालो जी ॥ कुंती नगरी चंदन लेइने, आव्यो सरनी पालो जी ॥ हं० ॥ ७॥ कुमर न दीठो मालें बांधीयो, दीधी बहुली धाहो जी ॥ हियडुं कूटे शिरने आहणे, दीधो हंसने दाहो जी ॥ हं० ॥ ८ ॥ पग उलखीया हंस कुमर तणा, दीधा सरला सादो जी ॥ फरी फरीने वन सहु जोइयुं, मूकी मन परमादो जी ॥ हं०॥ ९॥ कुंती नगरी पाछो आवीयो, शेठे दीधो दोषो जी ॥ चोर करीने राजा झालीयो, कीधो राजा रोषो जी ॥ हं० ॥ १० ॥ बार रतन ने वली बिहुं तुरी, राख्यां मुम्मण शेठ जी ॥ कूडुं आल दीयुं कुमर तणी, नीची घाली दृष्टि जी ॥ हं० ॥ ११ ॥ चित्रलेखानां वचन सुणी करी, खलनलीया सहु लोको जी ॥ कुमति सहुने आवी सामटी, सहुने पमशे ठोको जी ॥ हं० ॥ १२ ॥ सर्व गाथा ॥ ८१५॥

॥ दोहा ॥

॥ महाजन सहु सांसे पड्या, कीधुं जूंडु काम ॥
इण साथे आव्या सहु, रोषे हरशे दाम ॥ १ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मांहोमांहे चिंता करे, उठ्यां सरशे काम ॥ जो बेठां रहेश्यां इहां, तो पमशे सही मान ॥ २ ॥ के राजा मारे सही, के कापे सहु कान ॥ ग्रह पीमा सहुने करे, बूठ्यां दीजे दान ॥ ३ ॥ एक कहे समरो सहु, जेहना जे छे देव ॥ तेहनी ते रक्षा करे, समरयानी छे टेव ॥ ४ ॥ शिर ढांकीने उठीया, धूजन लाग्यां अंग ॥ पग पिंमी गोला चढ्या, मुम्मण नाठो संघ ॥ ५ ॥ नासंता नागा हुआ, बूटण लागी लांग ॥ थरहर थरहर नीसर्या, जिणमां न हुतो वांक ॥ ६ ॥ आगे पाछे नीकल्या, घर आव्या सहु शेठ ॥ पुत्र पिता बेठा सहु, नीची घाली देठ (दृष्टि) ॥ ७ ॥ सर्व गाथा ॥७२३॥

॥ ढाल दशमी ॥ मेंदीना गीतनी देशी ॥

॥ हंस जणे सुण नारी, वात कही हे सघली पाछली रे ॥ वज्र कुमरनी वात, मांमीने हे नाखो सुंदरि आगली रे॥१॥ कहे कुमरी सुण राय, मुम्मण शेठे प्रवहण पूरीयां रे ॥ शुन्न लगने शुन्न वार, तिहांथी हे पोत सहु हंकारीयां रे ॥ २ ॥ तुज बंधव लीयो साथ, कनकावती नगरी पासे तिहां गया रे ॥ करियाणां उतार्यां गाम, राजाने मलवा पुष्पदंत तिहां गया रे ॥ ३ ॥ में दीठो वज्रराज, देखीने हे में तिहांकणे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

आदरयो रे ॥ इण पुष्पदंते शेठ, तुज बंधवने अन्य जाति कोइ करयो रे ॥ ४ ॥ राजा धरीयो कोप, नगरीथी हो राजा बाहिर राखीया रे ॥ मारण मांमी घात, नाम ठाम सहु हे राजाने नाखीयां रे ॥ ५ ॥ राजा धरीयो राग, तुज बांधवने हो नगरीए आणीयो रे ॥ दीधुं बहु सन्मान, नगरने लोके हे कुमर वखाणीयो रे ॥ ६ ॥ हुं तुज बंधवनारी, सुख नोगवतां केइक दिन हुवा रे ॥ प्रवहण पूरयां शेठ, तुज बांधव ने हे हुं साथे हुवां रे ॥ ७ ॥ आव्यां समुद्र मझार, मुजने हे देखी पापी चिंतव्युं रे ॥ ए थापुं घरनारी, एम जाणीने हे पापी शुं ठव्युं रे ॥ ८ ॥ कीधुं कर्म चंमाल, आधी राते कुंवरने नाखीयो रे ॥ करवा मांमी घात, एह चरित्र सहु कुमरी नाखीयो रे ॥ ए ॥ सर्व गाथा ॥ ७३१ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥ राग मल्हार ॥ अथवा

॥ तप सरिखो जग को नहीं ॥ ए देशी ॥

॥ एह वचन श्रवणे सुणी, मूर्छाणो हंसराज ॥ हो सुंदर ॥ उठीने धरणी पडे, बंधव केरे काज ॥ हो सुंदर ॥ ए० ॥ १ ॥ मुज बंधव तिहांकिणे मूउं, जीवणनी किसी आश ॥ हो० ॥ रोवे रीसे आरडे, मन मांहे हुउं उदास ॥ हो० ॥ ए० ॥ २ ॥ चित्रलेखा कहे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रायजी, दुःख न कीजे कोइ ॥ हो० ॥ तुज बंधव मलशे सही, जीवंतो जो होइ ॥ हो० ॥ ए० ॥ ३ ॥ हंस भणे सुण कामिनी, पमीयो समुद्र मझार ॥ हो० ॥ जीवंता कहो केम मले, तव जंपे ते नार ॥ हो० ॥ ए० ॥ ४ ॥ तुज बंधव इहां आवीयो, सागर तरी महाराज॥हो०॥ सलखु मालणने घरे, रहे छे श्री वज्रराज ॥ हो० ॥ ए० ॥ ५ ॥ एह वचन श्रवणे सुणी, प्रणमे नारी पाय ॥ हो० ॥ वात कही सहु वांसली, वज्रघरणी तुं माय ॥ हो० ॥ ए० ॥ ६ ॥ हंस कुमर हरखे करी, पहोतो मालण गेह ॥ हो० ॥ पूठे सहु पाला पले, नर नारी नहीं छेह ॥ हो० ॥ ए० ॥ ७ ॥ बेहु भाइ भेला थया, मलीया मनने रंग ॥ हो० ॥ नगर हुआं वधामणां, कीधा बहुला जंग ॥ हो० ॥ ए० ॥ ८ ॥ घर घर गूरी उज्वली, तरीयां तोरण बार ॥ हो० ॥ पग पग नाटक नाचती, गावे अबला बाल ॥ हो० ॥ ए० ॥ ए ॥ सुखासन साथे घणां, साथे बहु असवार ॥ हो०॥राजलोक मांहे गया, हरख्यां सहु नर नार ॥ हो० ॥ ए० ॥ १० ॥ नारी कंत बेहु मल्यां, फलीया पुण्य अंकुर ॥ हो० ॥ वात सुणो हवे शेठनी, कहे श्रीजिनोदय सूरि ॥ हो० ॥ ए० ॥ ११ ॥ सर्व गाथा ॥ ७४२ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल बारमी ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ मुम्मण शेठ शंका परी रे, कीधुं नूंडुं काम ॥ इण वाते अपजश अति हुवे रे, न करे कोइ लेवा नाम कामो जी ॥१॥ पुत्र पिता हवे चिंतवे, रुडे रुडुं थाय ॥ नूंमाथी नूंडुं सदा हुवे, लोके एम कहाय ॥ मु० ॥ २ ॥ जे मति पाछे उपजे, सो मति पहेली होय ॥ काज न विणसे आपणुं, दुर्जन हसे न कोय ॥ मु० ॥ ३ ॥ हंस राजाए तलार तेमीया, मारो बिहुंने ठाम ॥ धाक पडे जिम सघला गाममां, को न करे ए काम ॥ मु० ॥ ४ ॥ शेठ कुटुंब शूली दीयो, मत करजो कांइ लाज ॥ घरनुं धन लूंटी इहां, सहु आणजो साज ॥ मु० ॥ ५ ॥ वज्र कहे जाइ तुमे सुणो, शेठ तणो नहीं दोष ॥ कृत कर्म लखीयुं ते पामीए, इणशुं केहो रोष ॥ मु० ॥ ६ ॥ मामात्रे कहीए सारिखी, करमे कीधी रीस ॥ पिताने परमेश्वर सारिखो, बेहु ठेदीयां शीश ॥ मु० ॥ ७ ॥ मनकेसरी मुहते तिहां राखीया, दीधुं जीवितदान ॥ उंची नीची आपे जोगवी, सविहु पुण्य प्रमाण ॥ मु० ॥ ८ ॥ शुभ अशुभ लखीयुं जे कर्ममां, ते निश्चेशुं होय ॥ नल राजाए हारी नारीने, वली वन मूकी सोय ॥ मु० ॥ ए ॥ हरिचंद्र राजा राज्य

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तणो धणी, वह्युं कुंब घर नीर ॥ दशरथ राजा श्रवण वध कीयो, जोरे मूक्युं तीर ॥ मु० ॥ १० ॥ देशवटे बे बांधव नीसर्या, लखमण ने वली राम ॥ रावण सीता वनमें अपहरी, कर्म तणां ए काम ॥ मु० ॥ ११ ॥ नीख मंगावी राजा मुंजने, विरुंबीयां ए कर्म ॥ एम जाणीने बंधव टालीए, कर्म तणो ए मर्म ॥ मु० ॥ १२ ॥ एहवां वचन सुणी वह्नराजनां, वरु बंधवनी लाज ॥ मुम्मण शेठ नणी मूकावीयो, उपकारी वह्नराज ॥ मु० ॥ १३ ॥ नगरथी बाहिर काढीयो, शेठ तणो परिवार ॥ वह्न कुमरने सहुको विनवे, तें कीधो उपकार ॥ मु० ॥ १४ ॥ सर्व गाथा ॥ ७५६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एम करतां बहु दिन हुआ, नोगवतां ते नोग ॥ निज नारीशुं सुखे रह्या, पुण्य मिल्यो संयोग ॥ १ ॥ बे बंधव मन चिंतवे, नहीं मैत्रीमां दोष ॥ कर्मे आपे काढीया, ताते कीधो रोष ॥ २ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ वाल्हेसर मुज विनति गोरी हो ॥ ए देशी ॥

॥ इहांथी चाली उतावलो रे ॥ बंधवीया ॥ जाशुं जननी पास रे ॥ बं० ॥ तात नणी जाइ मली रे ॥ बं० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पूरे सविहु आश रे ॥ बं० ॥ १ ॥ हंस कहे हंसा-
वलि रे ॥ बं० ॥ दुःख जर दाधी देह रे ॥ बं० ॥ चकवा
चकवी प्रीतमी रे ॥ बं० ॥ तेहवो राणीनो नेह रे ॥
बं० ॥ हं० ॥ २ ॥ जिम गयवर रेवा नदी रे ॥ बं० ॥
जेहवो चंद चकोर रे ॥ बं० ॥ जिम सुरजि ने वाउडो
रे ॥ बं० ॥ जेहवी प्रीति मेह मोर रे ॥ बं० ॥ हं० ॥ ३ ॥
मान सरोवर हंसलो रे ॥ बं० ॥ जेहवी कोयल आंब रे
॥बं०॥ जेहवी जलमां माउली रे ॥ बं० ॥ जेहवी प्रद्युम्न
सांब रे ॥बं०॥हं०॥४॥ जेहवी कंत ने कामिनी रे ॥बं०॥
क्रौंच बच्चाशुं चित्त रे ॥ बं० ॥ तेम आपणशुं माननी
रे ॥ बं० ॥ रहेती हशे प्रीत रे ॥ बं० ॥ हं० ॥ ५ ॥
एम आलोची आपसमां रे ॥ बं० ॥ केदहणने सोंपी
राज रे ॥ बं० ॥ हंस कुमर साथे हुवो रे ॥ बं० ॥ चाल्यो
श्री वज्रराज रे ॥ बं० ॥ हं० ॥ ६ ॥ शुज लग्ने शुज
वासरे रे ॥ बं० ॥ नारी लीधी साथ रे ॥ बं० ॥ हय गय
रथ परिवारशुं रे ॥ बं० ॥ लेइ बहुली आश रे ॥ बं०
॥ हं० ॥ ७ ॥ पुरपेठाणे आवीयो रे ॥ बं० ॥ कीधो
तिहां मेदहाण रे ॥ बं० ॥ डेरा तंबू ताणीया रे ॥ बं० ॥
को नवि कीध प्रयाण रे ॥ बं० ॥ हं० ॥ ८ ॥ आगल
मूके आदमी रे ॥ बं० ॥ तात जणावी वात रे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ बं० ॥ कुशल केम इहां आवीया रे ॥ बं० ॥ जाइ जणावी वात रे ॥ बं० ॥ हं० ॥ ए ॥ राजा सांभली हरखीयो रे ॥ बं० ॥ हरख्यां सहुको लोक रे ॥ बं० ॥ नगरे हुआं वधामणां रे ॥ बं० ॥ नाठो सविहु शोक रे ॥ बं० ॥ हं० ॥ १० ॥ सर्व गाथा ॥ ७६७ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ झुमखडानी देशी ॥ राणी वात सुणी तिसे रे, आया हंस वइराज ॥ मनोहर पूरणा ॥ रोम राय विकसी सहु रे, सिधां वांछित काज ॥ म० ॥ १ ॥ आज दिवस धन्य उगीयो रे, सफल फली मन आश ॥ म० ॥ कष्ट गयुं हवे माहरुं रे, नाठी मनही उदास ॥ म० ॥ २ ॥ घन आगम हरखे घणुं रे, नाचे नाटक मोर ॥ म० ॥ मेघ तणे मनही नहीं रे, करे बपैया सोर ॥ म० ॥ ३ ॥ तेम राणी सुत आगमे रे, धरती अंग उछाह ॥ म० ॥ हरखे शरीर शीतल हुवुं रे, नाठो दुःखनो दाह ॥ म० ॥ ४ ॥ राजा राणी बे जणां रे, मनकेसरी पण साथ ॥ म० ॥ लोक सहु मलवा गयां रे, आडंबर करी नाथ ॥ म० ॥ ५ ॥ सामा आव्या सादरे रे, प्रणम्या नरवर पाय ॥ म० ॥ हंसावलि हरखी घणुं रे, दीठी नजरे माय ॥ म०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ६ ॥ चरण नमे माता तणा रे, मात दीये आशीष ॥ म० ॥ हंस कुमर वछराजशुं रे, जीवो कोमी वरीस ॥ म० ॥ ७ ॥ हैयमा आगल आणीने रे, जीव्या अंगो अंग ॥ म० ॥ तिनसें साठ अंतेउरी रे, आय मीली मनरंग ॥ म० ॥ ८ ॥ मनकेसरी मुहता नणी रे, दीधुं अधिकुं मान ॥ म० ॥ तुजनो ऊरण केम हुवे रे, तें दीधुं जीवितदान ॥ म० ॥ ए ॥ नगति जुगति कीधी घणी रे, दीधां फोफल पान ॥ म० ॥ बेहु कुमर लेइ करी रे, घर आयो राजान ॥ म० ॥ १० ॥ अचरिज लोक देखी करी रे, पहुतां गामो गाम ॥ म० ॥ लीलावती राणी नणी रे, जाइ कीधो प्रणाम ॥ म० ॥ ११ ॥ राय कहे लीलावती रे, कीधुं न करे कोय ॥ म० ॥ अवगुण केडे गुण करे रे, हुं बलिहारी सोय ॥ म० ॥ १२ ॥ गंगाजल जिम निर्मलुं रे, एहवा हंस वछराज ॥ म० ॥ कूडो दोष देइ करी रे, मारण मांड्यो साज ॥ म० ॥ १३ ॥ नारी चरित न को लहे रे, सहुको कहे संसार ॥ म० ॥ निज पति परदेशी हण्यो रे, सूरिकंता जे नार ॥ म० ॥ १४ ॥ गोख थकी लेइ नाखीयो रे, जितशत्रु राजा नार ॥ म० ॥ गंगाजल मांहे नीकल्यो रे,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पुण्य तणे परकार ॥ म० ॥ १५ ॥ धनदत्त घरणी कंतने रे, मांड्यो मनशुं ओह ॥ म० ॥ कंत तणी देवी करी रे, आंधो बहेरो होह ॥ म० ॥ १६ ॥ इम चरित्त चूलणी कीयुं रे, बीजी न करे माय ॥ म० ॥ ते ब्रह्मदत्त राजा हुवो रे, पुण्य तणे सुपसाय ॥ म० ॥ १७ ॥ एम चरित्र नारी तणां रे, कहेतां नावे पार ॥ म० ॥ इण राणीने मारशुं रे, जिम सहु माने कार ॥ म० ॥ १८ ॥ सर्व गाथा ॥ ७०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राजा खांडुं काढीयुं, राणी मारण काज ॥ कुमर बे आमा पड्या, ठोमीजे महाराज ॥ १ ॥ ए राणी लीलावती, मात समी ए माय ॥ नारी-हत्या छे नारकी, तो किम कीजे राय ॥ २ ॥ लीला-वती परसादथी, मेली बहुली आथ ॥ चित्रलेखा परणी घरणी, आइ मिल्या नरनाथ ॥ ३ ॥ अभय-दान देवामीयुं, हंस अने वछराज ॥ पीयर परही मोकली, राखी सघली लाज ॥ ४ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥ ढोलनी देशी ॥

॥ नरवाहन राजा हवे ॥ सोभागी सुंदर ॥ पाले सुखमां राज ॥ सो० ॥ राणी हवे हंसावलि ॥ सो० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रोष नहीं कांही आज ॥ सो० ॥ १ ॥ बे पुत्र महारे जोमले ॥ सो० ॥ हंस अने वछराज ॥ सो० ॥ पमतो आज जाले जिस्या ॥ सो० ॥ सारे उत्तम काज ॥ सो० ॥ २ ॥ राते सुतो चिंतवे ॥ सो० ॥ नरवाहन ते राय ॥ सो० ॥ जो मुनिवर आवे इहां ॥ सो० ॥ सेवुं तेहना पाय ॥ सो० ॥ ३ ॥ एम चिंतवतां तेहवे ॥ सो० ॥ एहने उग्यो सूर ॥ सो० ॥ पंचसया परिवारशुं ॥ सो० ॥ आव्या धर्मघोष सूरि ॥ सो० ॥ ४ ॥ नरवाहन राजा हवे ॥ सो० ॥ वंदण हेते जाय ॥ सो० ॥ हंस वछ हंसावलि ॥ सो० ॥ वंदे मुनिना पाय ॥ सो० ॥ ५ ॥ सूरि दीये तिहां देशना ॥ सो० ॥ जलधर सम ते वाण ॥ सो० ॥ सुख दुःख कर्मे पाइए ॥ सो० ॥ कर्म तणे परिणाम ॥ सो० ॥ ६ ॥ जब हुइ पूरी देशना ॥ सो० ॥ नरवाहन तब राय ॥ सो० ॥ चरण नमी पूछे इस्युं ॥ सो० ॥ केहो पुण्यपसाय ॥ सो० ॥ ७ ॥ रमणी रुद्धि लीला घणी ॥ सो० ॥ हंस अने वछराज ॥ सो० ॥ संशय भांगो सद्गुरु ॥ सो० ॥ आया पूछण काज ॥ सो० ॥ ८ ॥ सद्गुरु कहे तुम सांभलो ॥ सो० ॥ पूरव भवनी वात ॥ सो० ॥ धनपुर नगरे तिहां वसे ॥ सो० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बे बांधव विख्यात ॥ सो० ॥ ए ॥ कर्ममेले धन सहु गयुं ॥ सो० ॥ धन शोचे दिन रात ॥ सो० ॥ नूधर सूधर बे जणा ॥ सो० ॥ जाय सदा परनात ॥ सो० ॥ १० ॥ कंध कुहामा लेइ करी ॥ सो० ॥ कटिए बांधे दोर ॥ सो० ॥ रोटी पण पूठे धरे ॥ सो० ॥ पोते पाप अघोर ॥ सो० ॥ ११ ॥ रानथी आणे इंधणां ॥ सो० ॥ नगरे वेचण जाय ॥ सो० ॥ एक टको लेइ सुंसतो ॥ सो० ॥ लूखुं सूकुं खाय ॥ सो० ॥ १२ ॥ बे बांधव रणमां गया ॥ सो० ॥ इंधण लेवा काज ॥ सो० ॥ रोटा ले आगे धस्या ॥ सो० ॥ नोजन करवा काज ॥ सो० ॥ १३ ॥ साथ थकी चूक्या यति ॥ सो० ॥ पडीया रणही मझार ॥ सो० ॥ अन्न पाणी मले नहीं ॥ सो० ॥ जे कीजे आहार ॥ सो० ॥ १४ ॥ बेहु बांधव मुनि पेखीया ॥ सो० ॥ दीधुं अढलक दान ॥ सो० ॥ मारग पण देखामीयो ॥ सो० ॥ तिणे पुण्य हुवा राजान ॥ सो० ॥ १५ ॥ डुःख बीजां जे पामीयां ॥ सो० ॥ ते पूरव कृत कर्म ॥ सो० ॥ एम जाणीने आदरो ॥ सो० ॥ साचो श्री जिनधर्म ॥ सो० ॥ १६ ॥ नरवाहन राजा कहे ॥ सो० ॥ रहेजो त्यां लगे साध ॥ सो० ॥ वज्रराज राजा ठवुं ॥ सो० ॥ लीउं चारित्र निर्बाध ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सो० ॥ १७ ॥ गुरु वांदी घर आवीयो ॥ सो० ॥ वज्र कुमरने दीधुं राज ॥ सो० ॥ कुंती नगरी तिहां-कणे ॥ सो० ॥ थाप्यो श्रीहंसराज ॥ सो० ॥ १८ ॥ नरवाहन चारित्र लीधुं ॥ सो० ॥ राणी लीधी दीख ॥ सो० ॥ बेहु संयम सूधो धरी ॥ सो० ॥ चाले जिन मत शीख ॥ सो० ॥ १९ ॥ सर्व गाथा ॥ ९०९ ॥

॥ ढाल सोलमी ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ सुमति पांच सूधी धरे जी, पाले पंचाचार ॥ एहवा साधु नमुं ॥ दोष बहेंतालीश टालता जी, करता उग्र विहार ॥ ए० ॥ १ ॥ केता कालने आंतरे जी, आया पुरपेठाण ॥ ए० ॥ वज्रराज वंदन गयो जी, प्रणम्या तात सुजाण ॥ ए० ॥ २ ॥ मुनिवर भाखे देशना जी, श्रावकनां व्रत बार ॥ ए० ॥ पंच महाव्रत साधुनां जी, जिणथी भवनो पार ॥ ए० ॥ ३ ॥ तात वचन श्रवणे सुण्यां जी, लीधुं समकित सार ॥ ए० ॥ श्रावक व्रत सूधां धर्यां जी, श्रीवज्रराज ने नार ॥ ए० ॥ ४ ॥ अंते अनशन आदरी जी, देइ पुत्रने राज ॥ ए० ॥ त्रीजे कल्पे उपना जी, सुख बहुलुं वज्रराज रे ॥ ए० ॥ ५ ॥ श्री खरतर गछ गुरुनिलो जी, श्रीभावहर्ष सूरींद ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ए० ॥ गछ चोराशी परगडो जी, साधु मांहे मुणींद ॥ ए० ॥ ६ ॥ तस वाटे महिमानिलो जी, श्रीजय-तिलक सूरि राय ॥ ए० ॥ महोटा महोटा भूपति जी, प्रणमे जेहना पाय ॥ ए० ॥ ७ ॥ संवत् सोल एंशीए समे जी, आशो सुदि रविवार ॥ ए० ॥ विजयदशमीए संथुण्यो जी, श्रीसंघने सुखकार ॥ ए० ॥ ८ ॥ एह प्रबंध सोहामणो जी, कहे श्री जिनोदय सूरि ॥ ए० ॥ भणे गुणे श्रवणे सुणे जी, तिणघरे आणंदपूर ॥ ए० ॥ ए॥ चार खंम चोपाइ करी जी, श्रीसंघ सुणवा काज ॥ ए० ॥ पुण्ये शिव-सुख पामीया जी, हंस अने वछराज ॥ ए० ॥ १० ॥ सर्व गाथा ॥ ए१ए ॥

इति हंसराजवछराजप्रबंधे चतुर्थः खंमः संपूर्णः ॥ ४ ॥
तत्समाप्तौ च श्रीहंसराजवछराजरासः समाप्तः ॥

॥ इति श्री हंसराज वछराजनो रास समाप्त ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तैयार छे ! तैयार छे ! तैयार छे !

श्रावक कर्तव्य तथा विविध स्तवनादि समुच्चय ग्रंथ

जेमां प्रातःस्मरणीय स्तोत्र, छंदो, दर्शनविधि, पूजाविधि चैत्यवंदनविधि, भावनास्वरूप, भिन्न भिन्न अनेक स्तवनो, चैत्यवंदनो, थोयो, लावणीउ, सज्झायो, नाटकना रागनां गायनो विगेरे, त्रणसो जेटलां पद्योनो संग्रह अने छेवटे नवस्मरण, शलोका, सामायिक तथा पच्चरकाणनी विधि आपी छे. प्रस्तावना खास वांचवा जेवी छे. तेमां क्रिय हेतु पुरःसर समजाववा यत्न कर्यो छे. आत्मचिंतनना क्रियाकर्म माटे आ ग्रंथनो संग्रह बहु उपयोगी छे. जैन कोममां आ ग्रंथ पहेलवहेलो बहार पडे छे.

शास्त्री अक्षरमां रु० १-१०-० गुजराती अक्षरमां रु० १-४-०

उपर सिवाय बीजां अनेक पुस्तको, तीर्थोना नकशा विगेरे मळे छे. विस्तारथी मोटा सूचीपत्र माटे त्रण आनानी टीकीटो मोकलो. बहार गामना ओर्डरो संभाल-पूर्वक वी. पी. थी मूकवामां आवे छे.

श्रावक भीमसिंह माणेक,

जैन पुस्तको वेचनार तथा प्रसिद्ध करनार.

मांडवी, शाकगल्ली—मुंबइ.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org